वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं. 168

भगवान नेमिनाथ विधान

–: रचयित्री :–

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि

श्री ज्ञानमती माताजी

परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के
आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती वर्ष (अप्रैल 2006-अप्रैल 2007)
के अन्तर्गत प्रकाशित

–प्रकाशक–

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

फोन नं.- (01233) 280184, 280236

COURTESY–JAIN BOOK DEPOT
C/o Shri Nabhi Kumar Manav Kumar Jain
C-4, Opp. PVR Plaza, Cannaught Place, New Delhi-1
Ph.-011-23416101-02-03/Website : www.jainbookdepot.com

द्वितीय संस्करण	श्रावण शुक्ला 15, वी.नि.2532	मूल्य
2200 प्रतियाँ	9 अगस्त 2006	12/-
	'रक्षाबंधन पर्व'	

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएं भी प्रकाशित होती रहती हैं।

–: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :–

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी

–: मार्गदर्शन :–

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी

–: निर्देशन :–

धर्मदिवाकर पीठाधीश क्षुल्लकरत्न श्री मोतीसागर जी महाराज

–: सम्पादक :–

कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

कम्पोजिंग-ज्ञानमती नेटवर्क
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

सम्पादकीय

–कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन

साहित्य समाज का दर्पण होता है उसी के द्वारा देश, समाज एवं प्राचीन तीर्थों के वैभव का ज्ञान होता है। जब इस धरती पर तीक्ष्ण बुद्धिधारी मनुष्य एक बार सुनने मात्र से ज्ञान प्राप्त कर उसे भूलते नहीं थे तब तक साहित्य लेखन की परम्परा नहीं थी किन्तु जब हमारे पूर्वाचार्यों ने मानव स्मृति को क्षीण होते देखा तब उन्होंने केवलज्ञानी भगवन्तों की वाणी को शास्त्रों में संजोना प्रारंभ किया।

लेखन परम्परा में सर्वप्रथम आचार्य गुणभद्रस्वामी ने कषाय पाहुड़ ग्रंथ एवं पुष्पदंत, भूतबली आचार्यों ने षट्खण्डागम ग्रंथ की रचना की, उसके पश्चात् आचार्य यतिवृषभ, कुन्दकुन्दाचार्य, उमास्वामी, अकलंकदेव, पूज्यपाद स्वामी, समन्तभद्र आदि अनेक आचार्यों ने अनेक बहुमूल्य ग्रंथ लिखे जो कि मंदिरों व शास्त्र भण्डारों में आज भी प्राप्त होते हैं।

बीसवीं शताब्दी में प्रथमाचार्य चारित्रचक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर महाराज के प्रथम पट्टाचार्य श्री वीरसागर महाराज की शिष्या परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने साहित्य सृजन के इतिहास में एक अपूर्व कीर्तिमान स्थापित किया है। उनके द्वारा लिखित 250 लघु एवं वृहत् काय ग्रंथों में अनेकों पूजा-विधान भी हैं जिनसे सम्पूर्ण देश का जैन समाज सुपरिचित है और जिसके द्वारा भक्ति गंगा अजस्र प्रवाहमान होकर भक्तों को पुण्य बंध के साथ ज्ञानामृत पान करा रही है। उसी श्रृंखला में पूज्य माताजी द्वारा रचित यह समयोचित एवं सारभूत कृति ''भगवान नेमिनाथ विधान'' है। जिसके द्वारा श्रद्धालुभक्त भगवान नेमिनाथ का गुणानुवाद कर महान पुण्य का संचय करते हुए अपनी आत्मा को समुन्नत बनावें, यही मंगलकामना है।

प्रस्तावना

–ब्र. कु. इन्दु जैन (संघस्थ)

अनादिनिधन जैनधर्म में दो शाश्वत तीर्थ माने गये हैं– 1. अयोध्या 2. सम्मेदशिखर। अयोध्या तीर्थ को जहाँ अनन्तानन्त तीर्थंकरों की जन्मभूमि होने का गौरव प्राप्त है वहीं सम्मेदशिखर अनन्तानन्त तीर्थंकरों एवं मुनियों की निर्वाणभूमि के नाम से जाना जाता है।

वर्तमान में हुण्डावसर्पिणी कालदोषवश केवल 5 तीर्थंकर अयोध्या में जन्में और शेष तीर्थंकर अलग-अलग स्थानों पर जन्में, इसी प्रकार बीस तीर्थंकर सम्मेदशिखर से मोक्ष गए और 4 तीर्थंकर अलग-अलग स्थानों से मोक्ष गए जिनमें से 22वें तीर्थंकर भगवान नेमिनाथ ने शौरीपुरी में राजा समुद्रविजय की महारानी शिवादेवी से जन्म लिया। विवाह के लिए गिरनार की ओर जाते समय बाड़े में बंधे पशुओं की चीत्कार सुनकर वैराग्य को प्राप्त हो गिरनार पर्वत पर जा दीक्षा ले घोर तपश्चरण किया और वहीं उन्हें दिव्य केवलज्ञान व निर्वाणपद की प्राप्ति हुई।

ऊर्जयन्तगिरि के नाम से प्रसिद्ध गिरनार तीर्थ को तीर्थराज माना जाता है क्योंकि सम्मेदशिखर के बाद नेमिनाथ स्वामी के तीन कल्याणक एवं करोड़ों मुनियों की मोक्ष स्थली होने का गौरव इसी पर्वत को प्राप्त है। वर्तमान में हम उन तीर्थंकरों की जन्मभूमि व निर्वाणभूमि आदि कल्याणक भूमियों को भूल रहे हैं जो कि सम्पूर्ण जैन समाज के लिए अत्यन्त चिन्तनीय विषय है। यह हमारा परम सौभाग्य ही है कि अनेकानेक अद्वितीय कार्यकलापों की जननी, तीर्थंकर भगवन्तों की पंचकल्याणक भूमियों के संरक्षण-संवर्धन, जीर्णोद्धार एवं विकास की प्रेरणास्रोत, राष्ट्रगौरव परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी का वात्सल्यपूर्ण सानिध्य इस कलिकाल में हमें प्राप्त है जिनकी प्रेरणा से तीर्थोद्धार, मूर्ति निर्माण, पूजा-विधानों तथा भक्तिमय अनेकों आयोजनों के माध्यम से इस दिशा में एक अविस्मरणीय सामाजिक चेतना आई है और कई जन्मभूमियों के विकास अब तक हो चुके हैं उसी श्रृँखला में उन्होंने 22वें तीर्थंकर भगवान नेमिनाथ के जन्म से निर्वाण पर्यंत

पंचकल्याणक भूमियों का सम्पूर्ण दिग्दर्शन स्वरचित नूतन कृति 'श्री नेमिनाथ विधान' की रचना करके कराया है। साथ ही उनकी पंचकल्याणक भूमियों के संरक्षण-संवर्धन, सुरक्षा आदि की प्रेरणा भी सम्पूर्ण जनमानस को प्रदान की है। इस नूतन कृति में विधान के साथ-साथ पूज्य प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी द्वारा रचित जन्मभूमि शौरीपुर एवं निर्वाणभूमि गिरनार जी सिद्धक्षेत्र की पूजा, परिचय एवं आरती आदि हैं जिनको हृदयंगम कर आप सब भगवान नेमिनाथ के सम्पूर्ण जीवन से प्रेरणा प्राप्त करें।

इस पूजा-विधान में भगवान नेमिनाथ की पूजा के साथ 108 मंत्र हैं। बंधुओं! जिनेन्द्र भगवान की भक्ति से तो अनेक मनोरथों की सिद्धि हो जाती है फिर भक्ति में निकले हुए शब्द तो रोग, शोक, दारिद्र्य, संकट हरने के साथ अकालमृत्यु व असाध्य रोगों को भी टालने में सक्षम हैं अतः कोई चमत्कार हो जाए तो कोई अतिशयोक्ति वाली बात नहीं है। अतः ऐसे चमत्कारिक विधान को करके आप सब मनवांछित फल के साथ-साथ तीर्थंकर भगवन्तों की जन्मभूमि व निर्वाणभूमियों की सुरक्षा हेतु दृढ़संकल्पी होते हुए अपनी आत्मा को समुन्नत बनावें, यही भावना है।

प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव जीवन दर्शन

—पीठाधीश क्षुल्लक मोतीसागर

आज से करोड़ों वर्ष पूर्व प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव का जन्म भारतवर्ष के उत्तरप्रदेश की अयोध्यानगरी के महाराजा नाभिराय की महारानी मरुदेवी की पवित्र कुक्षि से चैत्र कृष्णा नवमी को हुआ। क्षत्रियवर्णी, काश्यपगोत्रीय, इक्ष्वाकुवंशी, तप्त स्वर्ण सदृश, बैल चिन्ह से युक्त उन तीर्थंकर भगवान की शरीर की अवगाहना दो हजार हाथ एवं आयु चौरासी लाख पूर्व वर्ष की थी। भगवान ऋषभदेव ने कर्मभूमि के आदि में प्रजा को असि, मसि आदि षट्क्रियाओं द्वारा जीवन जीने की कला सिखाई थी। सम्पूर्ण विद्याओं और कलाओं के नीचे जैनेश्वरी दीक्षा ग्रहण कर घोर तपश्चरण किया पुनः मुनि परम्परा को जीवन्त करने हेतु आहारार्थ निकले। 1 वर्ष 39 दिन के पश्चात् उनका प्रथम आहार हस्तिनापुर के राजा श्रेयांस के यहाँ इक्षुरस का हुआ। प्रयाग के पुरिमतालपुर उद्यान में वटवृक्ष के नीचे फाल्गुन कृष्णा ग्यारस को उन्हें दिव्यकेवलज्ञान की प्राप्ति हुई, उनके समवसरण में श्री वृषभसेन आदि 84 गणधर, 84 हजार मुनि, गणिनी ब्राह्मी आर्यिका सहित 350000 आर्यिकाएं, 3 लाख श्रावक, 5 लाख श्राविकाएँ थे। उनके जिनशासन यक्ष गोमुख देव एवं यक्षी चक्रेश्वरी देवी हैं। आयु के अंत में उन्होंनेमाघ कृष्णा चौदस को कैलाशपर्वत से मोक्ष प्राप्त किया।

चौबीसवें तीर्थंकर भगवान महावीर का जीवन दर्शन

वर्तमान से 2605 वर्ष पूर्व चौबीसवें एवं अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर का जन्म भारतवर्ष के बिहार प्रांत में जिला नालंदा की कुण्डलपुर नगरी में महाराजा सिद्धार्थ की महारानी त्रिशला की पवित्र कुक्षि से चैत्र शुक्ला त्रयोदशी की पवित्र तिथि में हुआ। क्षत्रियवर्णी, काश्यपगोत्रीय, नाथवंशी, तप्त स्वर्ण सदृश, सिंह चिन्ह सेयुक्त उन तीर्थंकर भगवान के शरीर की अवगाहना सात हाथ एवं आयु 72 वर्ष की थी। 30 वर्ष की उम्र में अखण्ड ब्रह्मचर्यव्रत का पालन करने वाले भगवान महावीर ने षण्डवन में सालवृक्ष के नीचे मगशिर कृष्णा दशमी तिथि में दीक्षा ग्रहण की। उनका प्रथम आहार कूल ग्राम के राजा वकुल के द्वारा खीर का हुआ तथा विशेष आहार कौशाम्बी में महासती चंदना द्वारा खीर का हुआ। भगवान महावीर को दिव्य केवलज्ञान की प्राप्ति ज्ञातृषण्डवन में वैशाख शुक्ल दशमी को ऋजुकूला नदी के तट पर हुई, उनके समवसरण में श्री इन्द्रभूति आदि 11 गणधर, 14 हजार मुनि, गणिनी आर्यिका चन्दना सहित छत्तीस हजार आर्यिकाएँ, 1 लाख श्रावक व 3 लाख श्राविकाएं थीं। उनकी दिव्यध्वनि श्रावण कृष्णा एकम को खिरी और कार्तिक कृष्णा अमावस्या को आज से 2532 वर्ष पूर्व बिहार प्रान्त स्थित पावापुरी से मोक्ष पद प्राप्त किया।

भगवान महावीर के वीर, वर्द्धमान, महावीर, सन्मति, अतिवीर ये पाँच नाम प्रसिद्ध हैं।

पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से घोषित सम्मेदशिखर वर्ष (2006-2007) के अन्तर्गत अपने-अपने तीर्थों व मंदिरों में भगवान पार्श्वनाथ के निम्न जीवन दर्शन को शिलालेखों पर उत्कीर्ण करवाकर लगवायें।

तेइसवें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ का जीवन दर्शन

-गणिनी ज्ञानमती

जन्मभूमि	–	**वाराणसी (उत्तर प्रदेश)**
पिता	–	महाराजा अश्वसेन
माता	–	महारानी वामादेवी (ब्राह्मी)
वर्ण	–	क्षत्रिय
वंश	–	उग्रवंश
देहवर्ण	–	मरकतमणि सदृश (हरा)
चिन्ह	–	सर्प
आयु	–	सौ वर्ष
अवगाहना	–	नौ हाथ
गर्भ	–	वैशाख कृ. 2
जन्म	–	पौष कृ. 11
तप	–	पौष कृ. 11
दीक्षा वन एवं वृक्ष	–	अश्ववन एवं देवदारूवृक्ष
प्रथम आहार	–	गुल्मखेट नगर के राजा धन्य द्वारा (खीर)
केवलज्ञान स्थल	–	अहिच्छत्र
केवलज्ञान	–	चैत्र कृ. 4 (14)
मोक्ष	–	श्रावण शु. 7
मोक्षस्थल	–	सम्मेद शिखर पर्वत
समवसरण में गणधर	–	श्री स्वयंभू आदि 10
मुनि	–	सोलह हजार
गणिनी	–	आर्यिका सुलोचना
आर्यिका	–	छत्तीस हजार
श्रावक	–	एक लाख
श्राविका	–	तीन लाख
जिनशासन यक्ष	–	धरणेन्द्र देव
यक्षी	–	पद्मावती देवी

भगवान पार्श्वनाथ वर्तमान वीर नि.सं. 2532 से 2782 वर्ष पहले मोक्ष गए हैं।

तीर्थ विकास की प्रेरिका-जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी पूज्य गणिनीप्रमुख

आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी का

-:संक्षिप्त-परिचयः-

लेखिका-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

जन्मस्थान : टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.
जन्मतिथि : आसोज सुदी 15 (शरदपूर्णिमा) वि. सं. 1991(सन् 1934)
गृहस्थ का नाम : कु. मैना
माता-पिता : श्रीमती मोहिनी देवी एवं श्री छोटेलाल जैन
आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत एवं गृहत्याग : ई. सन् 1952 में बाराबंकी में शरदपूर्णिमा के दिन आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज से।
क्षुल्लिका दीक्षा : चैत्र कृ. 1, ई. सन् 1953 को महावीरजी अतिशय क्षेत्र (राज.) में
आर्यिका दीक्षा : वैशाख कृ. 2, ई. सन् 1956 को माधोराजपुरा (राज.) में चारित्रचक्रवर्ती 108 आचार्यश्री शांतिसागर जी की परम्परा के प्रथम पट्टाधीश आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज के करकमलों से।

साहित्यिक कृतित्व :अष्टसहस्री, समयसार, नियमसार, मूलाचार, कातंत्र-व्याकरण, षट्खण्डागम आदि ग्रंथों के अनुवाद/टीकाएं एवं 250 विशिष्ट ग्रंथों की लेखिकासन् 1995 में अवध वि.वि. (फैजाबाद) द्वारा "डी.लिट्." की मानद उपाधि से विभूषित।

तीर्थ निर्माण प्रेरणा : हस्तिनापुर में जंबूद्वीप तीर्थ का निर्माण, शाश्वत तीर्थ अयोध्या का विकास एवं जीर्णोद्धार, प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में तीर्थंकर ऋषभदेव दीक्षा तीर्थ का निर्माण, तीर्थंकर जन्मभूमियों का विकास, भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदाबिहार) में 'नंद्यावर्त महल' नामक तीर्थ निर्माण,मांगीतुंगी मेंनिर्माणाधीन 108 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की विशाल प्रतिमा।

महोत्सव प्रेरणा : पंचवर्षीय जम्बूद्वीप महामहोत्सव, भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव, अयोध्या में भगवान ऋषभदेव महाकुंभ मस्तकाभिषेक, कुण्डलपुर महोत्सव, भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव ।

शैक्षणिक प्रेरणा : 'जैन गणित और त्रिलोक विज्ञान' पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन, इतिहासकार सम्मेलन, न्यायाधीश सम्मेलन एवं अन्य अनेक राष्ट्रिय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर के सेमिनार आदि।

रथ प्रवर्तन प्रेरणा : जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति (1982 से 1985), समवसरण श्रीविहार (1998 से 2002), महावीर ज्योति (2003-2004) का भारत भ्रमण।

इस प्रकार नित्य नूतन भावनाओं की जननी पूज्य माताजी चिरकाल तक इस वसुधा को सुशोभित करती रहें, यही मंगल कामना है।

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान-संक्षिप्त परिचय

–पीठाधीश क्षुल्लक मोतीसागर

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान की स्थापना पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से सन् 1972 में राजधानी दिल्ली में हुई थी। संस्थान का मुख्य कार्यालय सन् 1974 में हस्तिनापुर में प्रारंभ हुआ। इस संस्थान के अन्तर्गत अनेक गतिविधियाँ हस्तिनापुर में तथा अन्यत्र चल रही हैं-

1. सन् 1972 से वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला के अन्तर्गत लाखों ग्रंथ प्रकाशित हो रहे हैं।

2. सन् 1974 से इस संस्थान के मुखपत्र के रूप में 'सम्यग्ज्ञान' हिन्दी मासिक पत्रिका का निरंतर प्रकाशन हो रहा है।

3. सन् 1974 से 1985 तक हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप रचना का निर्माण कार्य हुआ।

4. सन् 1974 से अब तक जम्बूद्वीप रचना के अतिरिक्त 11 जिनमंदिरों का निर्माण हुआ है-कमल मंदिर, तीन मूर्ति मंदिर, ध्यान मंदिर, शांतिनाथ मंदिर, वासुपूज्य मंदिर, ॐ मंदिर, सहस्रकूट मंदिर, विद्यमान बीस तीर्थंकर मंदिर, आदिनाथ मंदिर, कैलाशपर्वत, ऋषभदेव कीर्तिस्तंभ, इन्द्रध्वज मंदिर तथा नवग्रहशांति जिनमंदिर।

5. जम्बूद्वीप पुस्तकालय जिसमें लगभग 15000 ग्रंथ संग्रहीत हैं।

6. णमोकार महामंत्र बैंक जिसमें भक्तों द्वारा लिखकर भेजे गये णमोकार मंत्र जमा किये जाते हैं।

7. समय-समय पर शिक्षण-प्रशिक्षण शिविरों तथा संगोष्ठियों के आयोजन किये जाते हैं।

8. यात्रियों के शुद्ध भोजन के लिए राजा श्रेयांस भोजनालय का संचालन।

9. यात्रियों के ठहरने के लिए डीलक्स फ्लैट्स वाली कई धर्मशालाओं तथा कोठियों एवं बंगलों का निर्माण किया गया है।

10. जम्बूद्वीप परिक्रमा के लिए नौका विहार, ऐरावत हाथी, मिनी ट्रेन, झूलें दिखाई हैं।

11. ज्ञानमती कला मंदिरम् में हस्तिनापुर के प्राचीन इतिहास से संबंधित झाँकियाँ हैं।

दिल्ली, मेरठ, मुजफ्फरनगर, हरिद्वार, झाँसी, तिजारा आदि से जम्बूद्वीप स्थल तक आने के लिए दिनभर बसें मिलती रहती हैं।

दि. जैन त्रिलोक शोध संस्थान के अन्तर्गत भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा) बिहार में भव्य नंद्यावर्त महल तीर्थ तथा प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में निर्मित भगवान ऋषभदेव दीक्षा तीर्थ का भी संचालन होता है।

जम्बूद्वीप एवं अन्य तीर्थों के दर्शन हेतु कम से कम एक बार अवश्य पधारें।

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला के शिरोमणि संरक्षक

1. श्रीमती निर्मला जैन ध.प. श्री प्रेमचन्द्र जैन, तत्पुत्र प्रदीप कुमार जैन, खारी बावली, दिल्ली-6।
2. श्रीमती सुमन जैन ध.प. श्री दिग्विजय सिंह जैन, इंदौर।
3. श्री महावीर प्रसाद जैन संघपति, जी 19, साऊथ एक्सटेन्शन, नई दिल्ली।
4. श्री महेन्द्र पाल हरेन्द्र कुमार जैन, सूरजमल विहार, दिल्ली।
5. श्रीमती मोहनी जैन ध.प. श्री सुनील जैन, प्रीत विहार, दिल्ली।
6. श्री देवेन्द्र कुमार जैन (धारूहेड़ा वाले) गुड़गाँव (हरि.)।
7. श्रीमती शारदा रानी जैन ध.प. स्व. रिखबचंद जैन, बाहुबली एन्क्लेव, दिल्ली-92।
8. डॉ. देवेन्द्र कुमार जैन, भोपाल (म.प्र.)
9. श्रीमती संगीता जैन ध.प. श्री संजीव कुमार जैन, शेरकोट (बिजनौर) उ.प्र.
10. श्री अनिल कुमार जैन, दरियागंज, दिल्ली
11. श्री बी.डी. मदनाइक, मुम्बई
12. श्री धनकुमार जैन, बाहुबली एन्क्लेव, दिल्ली

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला के परम संरक्षक

1. श्री माँगीलाल बाबूलाल पहाड़े, हैदराबाद (आन्ध्र प्रदेश)।
2. डॉ. प्रकाशचन्द्र जैन, 792 विवेकानंदपुरी, सिविल लाइन, सीतापुर (उ.प्र.)।
3. श्री सुमत प्रकाश जैन, गज्जू कटरा, शाहदरा, दिल्ली।
4. श्री सुनील कुमार जैन, द्वारा-सुनील टैक्सटाईल्स, सरधना (मेरठ) उ.प्र.।
5. श्री प्रकाश चंद अमोलक चंद जैन सर्राफ, सनावद (म.प्र.)।
6. श्री प्रद्युम्न कुमार जवेरी, रोकड़ियालेन, बोरीवली (वेस्ट) मुंबई।
7. श्रीमती उर्मिला देवी ध.प. श्री कान्ती प्रसाद जैन, ऋषभ विहार, दिल्ली।
8. श्रीमती उषा जैन ध.प. श्री विमल प्रसाद जैन, ऋषभ विहार, दिल्ली।
9. श्री आनन्द प्रकाश जैन (सौरम वाले) , गांधीनगर, दिल्ली।
10. श्रीमती सरिता जैन ध.प. श्री राजकुमार जैन, किदवई नगर, कानपुर।
11. स्व. श्रीमती कैलाशवती ध.प. श्री कैलाश चन्द्र जैन , तोपखाना बाजार, मेरठ।
12. श्री भानेन्द्र कुमार जैन, द्वारा-श्री विद्या जैन, भगत सिंह मार्ग, जयपुर।
13. श्री प्रदीप कुमार शान्तिलाल बिलाला, अनूपनगर, इंदौर, (म.प्र.)।
14. श्री सुरेशचंद पवन कुमार जैन, बाराबंकी (उ.प्र.)।
15. श्री नथमल पारसमल जैन, कलकत्ता-7।
16. श्रीमती स्व. शांताबाई ध.प. श्री कमलचंद जैन, सनावद (म.प्र.)।
17. श्री रूपचंद जैन कटारिया, दिल्ली
18. श्री आशु जैन, कालका जी, नई दिल्ली

तीर्थंकर नेमिनाथ का परिचय

—गणिनी आर्यिका ज्ञानमती

पुष्करार्ध द्वीप के पश्चिम सुमेरू की पश्चिम दिशा में जो महानदी (सीतोदा नदी है) उसके उत्तर तट पर एक गंधिल नाम का महादेश है। उसके विजयार्ध पर्वत की उत्तरश्रेणी में सूर्यनगर का स्वामी सूर्यप्रभ राजा राज्य करत था। उसकी स्त्री का नाम धारिणी था दोनों के चिन्तागति, मनोगति और चपलगति नाम के तीन पुत्र हुए। उसी विजयार्ध की उत्तर श्रेणी के अरिन्दमन नगर में राजा अरिंजय की अजितसेना रानी से प्रीतिमती नाम की पुत्री हुई। उसने यह प्रतिज्ञा की थी कि जो विद्या से मेरु की प्रदक्षिणा में मुझे जीत लेगा मैंउसी से विवाह करूँगी। उसने अपनी विद्या से चिन्तागति को छोड़कर समस्त विद्याधर कुमारों को मेरुपर्वत की तीन प्रदक्षिणा में जीत लिया।

तब चिन्तागति उसे अपने वेग से जीतकर कहने लगा कि तू रत्नों की माला से मेरे छोटे भाई को स्वीकार कर। प्रीतिमती बोली, जिसने मुझे जीता है उसके सिवाय मैं दूसरे का वरण नहीं करूँगी। चिन्तागति ने कहा, चूँकि तू पहले उन्हें प्राप्त करने की इच्छा से ही मेरे छोटे भाई के साथ गति युद्ध किया था अतः तू मेरे लिये त्याज्य है। चिन्तागति के यह वचन सुनते ही वह विरक्त हो गई और विवृत्ता नाम की आर्यिका के पास जाकर दीक्षित हो गई। यह देख वहाँ बहुत से लोगों ने दीक्षा धारण कर ली। कन्या का यह साहस देखकर चिन्तागति ने भी अपने दोनों भाइयों के साथ दमवर नामक गुरु के पास दीक्षा ले ली। बहुत काल तक तपश्चरण करते हुये वे तीनों समाधिपूर्वक मरकर चौथे स्वर्ग में देव हो गये।

मनोगति और चपलगति नाम के दोनों छोटे भाई के जीव स्वर्ग से च्युत हुए। जम्बूद्वीप सम्बन्धी पूर्व विदेह क्षेत्र के पुष्कला देश में जो विजयार्ध पर्वत है उसकी उत्तर श्रेणी में गगनवल्लभ नगर के राजा गगनचन्द की गगनसुंदरी रानी से दोनों देव के जीव अमितगति और अमिततेज नाम के पुत्र उत्पन्न हो गये।

इसी जम्बूद्वीप के पश्चिम विदेह में सीतोदा के उत्तर तट पर सुगंधिलादेश में एक सिंहपुर नाम का नगर है। उसके अर्हदास राजा की जिनदत्ता रानी

से चिंतागति देव का जीव स्वर्ग से च्युत होकर पुत्र हो गया। माता-पिता ने उसका नाम अपराजित रखा था।

किसी दिन राजा अर्हदास ने मनोहर नामक उद्यान में पधारे हुए विमलवाहन तीर्थंकर की वंदना करके धर्मरूपी अमृत का पान किया। अनन्तर अपराजित पुत्र को राज्य देकर पाँच सौ राजाओं के साथ मुनि हो गये। कुमार अपराजित पिता के दिये हुए राज्य का संचालन करने लगे और सम्यग्दर्शन तथा अणुव्रत से विभूषित होकर धर्म का पालन करने लगे। किसी दिन उन्होंने सुना कि 'हमारे पिता के साथ श्री विमलवाहन भगवान गंधमादन पर्वत से मोक्ष प्राप्त कर चुके हैं।' यह सुनते ही उन्होंने प्रतिज्ञा की कि ' मैं विमलवाहन भगवान के दर्शन किये बिना भोजन नहीं करूँगा।' इस प्रतिज्ञा से उसे आठ दिन का उपवास हो गया। तदनंतर इन्द्र की आज्ञा से यक्षपति ने उस राजा को भगवान विमलवाहन का साक्षात्कार कराकर दर्शन कराया अर्थात् समवसरण बनाकर विमलवाहन का दर्शन कराया।

किसी एक दिन बसंत ऋतु में अष्टान्हिका के समय बुद्धिमान राजा अपराजित जिन प्रतिमाओं की पूजा स्तुति करके वहीं पर बैठे हुए धर्मोपदेश कर रहे थे कि उसी समय आकाश से दो चारणऋद्धिधारी मुनिराज आकर वहीं पर विराजमान हो गये। राजा ने उनके सम्मुख जाकर बड़ी विनय से उनके चरणों में नमस्कार किया, धर्मोपदेश सुना अनन्तर कहा कि हे पूज्य! मैंने पहले कभी आपको देखा है। उनमें से ज्येष्ठ मुनि बोले-हाँ राजन्! ठीक कहते हो, आपने हम दोनों को देखा है परंतु कहाँ देखा है? वह स्थान मैं कहता हूँ सो सुनो—

पुष्करार्ध द्वीप के पश्चिम मेरु संबंधी पश्चिम विदेह में गंधिल नाम का महादेश है। उसके विजयार्ध की उत्तर श्रेणी में सूर्यप्रभ नगर के राजा सूर्यप्रभ के चिंतागति, मनोगति और चपलगति नाम के तीन पुत्र थे। प्रीतिमती नाम की विद्याधर कन्या के गतियुद्ध के प्रसंग में हम तीनों ने दीक्षित होकर तपश्चरण करके चतुर्थ स्वर्ग को प्राप्त किया था।

वहाँ से च्युत होकर हम दोनों छोटे भाई पूर्व विदेह में अमितगति और अमिततेज नाम के विद्याधर हुए हैं। किसी एक दिन हम दोनों पुण्डरीकिणी

नगरी गये। वहाँ श्री स्वयंप्रभ तीर्थंकर से हम दोनों ने अपने पिछले तीन जन्मों का वृत्तांत पूछा। तब भगवान ने सब भवावली बतलाई। अनन्तर हमने पूछा कि हमारा बड़ा भाई इस समय कहाँ है? इसके उत्तर में भगवान ने कहा कि वह सिंहपुर का अपराजित नाम का राजा है। यह सुनकर हम दोनों ने उन्हीं के पास जैनेश्वरी दीक्षा ग्रहण कर ली और तुम्हें देखने के लिए जन्मान्तर के स्नेहवश यहाँ आये हैं। अब तुम्हारी आयु केवल एक माह की शेष रह गई है शीघ्र ही आत्म कल्याण करो। हे अपराजित! तुम इससे पाँचवें भव में भरत-क्षेत्र के हरिवंश नामक महावंश में 'अरिष्टनेमि' नाम के तीर्थंकर होवोगे।' यह सुनकर राजा ने बार-बार उन मुनियों की वंदना की और कहा कि आप यद्यपि निर्ग्रंथ अवस्था को प्राप्त हुए हैं तो भी जन्मांतर के स्नेह से आपने मेरा बड़ा ही उपकार किया है। अनंतर मुनिराज के चले जाने के बाद राजा अपने पुत्र को राज्य देकर आप प्रायोपगमन संन्यास विधि से मरण करके सोलहवें स्वर्ग में अच्युतेन्द्र हो गये।

वह पुण्यात्मा वहाँ के दिव्य भोगों का अनुभव कर आयु के अंत में वहाँ से च्युत हुआ। इसी जंबूद्वीप के भरतक्षेत्र संबंधी कुरुजांगल देश में हस्तिनापुर के राजा श्रीचन्द्र की श्रीमती रानी से सुप्रतिष्ठ नाम का यशस्वी पुत्र हुआ। कालांतर में पिता द्वारा प्रदत्त राज्य का निष्कंटक उपभोग करते हुये किसी दिन यशोधर नामके मुनिराज को आहारदान देकर पंचाश्चर्य को प्राप्त किया। किसी दूसरे दिन वह राजा रानियों के साथ राजमहल की छत पर बैठा हुआ दिशाओं की शोभा का अवलोकन कर रहा था कि इसी बीच अकस्मात् उल्कापात को देखकर विरक्त हो गया और सुमंदर नामक जिनेन्द्र भगवान के पास जाकर जैनेश्वरी दीक्षा ग्रहण कर ली।

"मुनिराज सुप्रतिष्ठ ने ग्यारह अंग और चौदह पूर्वों का अध्ययन किया और सर्वतोभद्र को आदि लेकर सिंहनिष्क्रीडितपर्यन्त अनेकों व्रतों का अनुष्ठान किया। हे महाभाग! श्रवण मात्र से ही पापों को नष्ट करने वाले उन उपवासों की महाविधि को तुम स्थिर मन कर के सुनो।" ऐसा हरिवंश पुराण में बताया है। यहाँ इन व्रतों की विधि न बतलाकर केवल कुछ नाममात्र दिये जाते हैं। विशेष जिज्ञासुओं को हरिवंश पुराण में देखना चाहिए।

"सर्वतोभद्र, वसंतभद्र, महासर्वतोभद्र, त्रिलोकसार, वज्रमध्य, मृदंगमध्य, मुरजमध्य, एकावली, द्विकावली, मुक्तावली, रत्नावली, रत्नमुक्तावली, कनकावली, द्वितीय रत्नावली, सिंहनिष्क्रीडित, मध्यम सिंहनिष्क्रीडित तथा उत्तम और जघन्य सिंहनिष्क्रीडित, नंदीश्वर पंक्ति, मेरुपंक्ति, विमानपंक्ति, शात कुंभ, चान्द्रायण, सप्तसप्तमतपोविधि, अष्टाष्टम, नवनवमादि, आचाम्लवर्धन, श्रुतविधि, दर्शनशुद्धि, तपःशुद्धि, चारित्रशुद्धि, एककल्याण, पंचकल्याण, शीलकल्याण विधि, भावनाविधि, पंचविंशति-कल्याण भावनाव्रत, दुःखहरण कर्मक्षय, जिनेंद्रगुण संपत्ति, दिव्यलक्षणपंक्ति, धर्मचक्रविधि, परस्पर कल्याण, परिनिर्वाण, प्रातिहार्य प्रसिद्धि, विमान पंक्ति आदि व्रत।

"इस प्रकार विधिवत् इन व्रतों के कर्ता सुप्रतिष्ठ मुनिराज ने उस समय निर्मल सोलहकारण भावनाओं के द्वारा तीर्थंकर नाम कर्म का बंध कर लिया।"

जब आयु का अंत आया तब समाधि धारण कर एक महीने का संन्यास लेकर प्राणों का त्याग किया और जयंत नामक अनुत्तर विमान में अहमिंद्र पद प्राप्त कर लिया। वहां पर तेंतीस सागर की आयु थी और एक हाथ ऊँचा शरीर था। उनको साढ़े सोलह माह के अंत में एक बार श्वास का ग्रहण होता है। तेंतीस हजार वर्ष बीत जाने पर एक बार मानसिक आहार था। इस प्रकार सुख सागर में निमग्न उन अहमिंद्र ने वहां की आयु को समाप्त कर दिया।

नेमिनाथ का जन्म–

कुशार्थ देश के शौरीपुर नगर में हरिवंशी राजा शूरसेन रहते थे। उनके वीर नाम के पुत्र की धारिणी रानी से अंधकवृष्टि और नरवृष्टि नाम के दो पुत्र हुए। अंधकवृष्टि की रानी का नाम सुभद्रा था। इन दोनों के समुद्रविजय, स्तिमितसागर, हिमवान्, विजय, अचल, धारण, पूरण, पूरितार्थीच्छ, अभिनंदन और वासुदेव ये दस पुत्र थे तथा कुन्ती और माद्री नाम की दो पुत्रियाँ थीं।

समुद्रविजय की रानी का नाम शिवादेवी था। पिता के द्वारा प्रदत्त राज्य का श्री समुद्रविजय महाराज धर्मनीति से संचालन करते थे। छोटे भाई वसुदेव की रोहिणी से बलभद्र एवं देवकी रानी से श्रीकृष्ण का जन्म हुआ था।

तिलोयपण्णत्ति ग्रंथ के अनुसार भगवान नेमिनाथ का जन्म शौरीपुर में

ही हुआ है। हरिवंशपुराण में भी भगवान का जन्म शौरीपुर में ही माना है।

जब जयंत विमान के इन्द्र की आयु छह मास की शेष रह गई तब काश्यपगोत्री, हरिवंश शिखामणि शौरीपुर के राजा समुद्रविजय की रानी शिवादेवी के आंगन में देवों द्वारा की गई रत्नों की वर्षा होने लगी। कार्तिक शुक्ला षष्ठी के दिन उत्तराषाढ़ नक्षत्र में वह अहमिंद्र का जीव रानी के गर्भ में आ गया।

अनंतर नवमास के बाद श्रावण शुक्ला षष्ठी के दिन चित्रा नक्षत्र में ब्रह्मयोग के समय तीन ज्ञान के धारक भगवान का जन्म हुआ। इंद्रादि देवों ने जन्मोत्सव मनाकर तीर्थंकर शिशु का 'नेमिनाथ' नामकरण किया। भगवान नमिनाथ के बाद पाँच लाख वर्ष बीत जाने पर नेमिजिनेन्द्र उत्पन्न हुये हैं। उनकी आयु एक हजार वर्ष की थी, शरीर दस धनुष ऊँचा था। प्रभु के शरीर का वर्ण नील कमल के सदृश होते हुये भी इतना सुन्दर था कि इंद्र ने एक हजार नेत्र बना लिये फिर भी रूप को देखते हुये तृप्त नहीं हुआ था।

पुनः हरिवंशपुराण में ऐसा वर्णन आया है कि जब कृष्ण ने कंस का वध किया अनंतर जरासंध के भाई अपराजित का भी वध कर दिया। तब कुपित हो जरासंध ने शौरीपुर की ओर सेना भेजी। उसी मध्य देवताओं ने युक्ति से युद्ध रोक दिया, यद्यपि ये जानते थे प्रभु नेमिनाथ तीर्थंकर हैं और श्रीकृष्ण नारायण तथा बलदेव बलभद्र हैं। नारायण के द्वारा ही जरासंध का वध होगा फिर भी अभी समय की प्रतीक्षा की जावे, ऐसा समझकर तीर्थंकर एवं नारायण के पुण्य प्रभाव से ही एवं इंद्र की आज्ञा से कुबेर ने समुद्र के बीच में ही एक द्वारावती नगरी की रचना कर दी।

भगवान देवों द्वारा लाई गई दिव्य भोगसामग्री का अनुभव करते हुये चिरकाल तक द्वारावती में रहे। किसी एक दिन मगध देश के कुछ व्यापारी उस नगरी में आ गये और वहाँ से श्रेष्ठरत्न खरीद कर अपने देश में ले गये तथा अर्धचक्री (प्रतिनारायण) राजा जरासंध को रत्न भेंट किये। राजा ने उन रत्नों को देखकर महान आश्चर्य चकित होकर उनसे पूछा कि आप ये रत्न कहाँ से लाये हो? उत्तर में उन लोगों ने श्रीकृष्ण और भगवान नेमिनाथ के वैभव का वर्णन कर दिया। यह सुनते ही जरासंध कुपित होकर युद्ध करने को तैयार हो गया।

'शत्रु चढ़कर आ गया है' यह समाचार सुनकर श्री कृष्ण को जरा भी चिंता नहीं हुई। वे भगवान नेमिनाथ के पास गये और बोले कि आप इस नगर की रक्षा कीजिये। सुना है कि राजा जरासंध हम लोगों को जीतना चाहता है सो मैं उसे आपके प्रभाव से घुने हुये जीर्णवृक्ष के समान शीघ्र ही नष्ट किये देता हूँ। श्रीकृष्ण के वचन सुनकर प्रभु ने अपने आप अवधिज्ञान से विजय को निश्चित जानकर मुस्कुराते हुये 'ओम्' शब्द कह दिया अर्थात् अपनी स्वीकृति दे दी। श्रीकृष्ण भी प्रभु की मुस्कान से अपनी विजय को निश्चित समझकर समस्त हरिवंशी राजकुमार और पांडव आदिकों के साथ कुरुक्षेत्र में आ गये।

इस भयंकर युद्ध में राजा जरासंध ने कुपित होकर चक्र श्रीकृष्ण पर चला दिया। वह चक्ररत्न भी श्रीकृष्ण की प्रदक्षिणा देकर उनकी दाहिनी भुजा पर ठहर गया, बस क्या था श्रीकृष्ण ने उसी चक्र से जरासंध का काम समाप्त कर दिया और तत्क्षण ही देवों द्वारा पूजा को प्राप्त हुए। अर्ध चक्री (नारायण) हो गये। अनंतर बड़े हर्ष से इन लोगों ने द्वारावती में प्रवेश किया और वहाँ पर राज्याभिषेक को प्राप्त हुए।

''किसी एक दिन कुबेर द्वारा भेजे हुए वस्त्राभरणों से अलंकृत युवा श्री नेमिकुमार, बलदेव तथा नारायण आदि कोटि-कोटि राजागण एवं राजपुत्रों से भरी हुई कुसुमचित्रा नाम की सभा में गये। राजाओं ने अपने-अपने आसन छोड़ प्रभु के सन्मुख आकर उन्हें नमस्कार किया। श्रीकृष्ण ने भी आकर उनकी अगवानी की। तदनंतर श्रीकृष्ण के साथ वे उनके आसन को अलंकृत करने लगे।

वहाँ वार्तालाप के प्रसंग में बलवानों की गणना छिड़ने पर किसी ने अर्जुन को, किसी ने युधिष्ठिर को इत्यादिरूप से किसी ने श्रीकृष्ण को अत्यधिक बलशाली कहा। तरह-तरह की वाणी सुनकर बलदेव ने लीलापूर्ण दृष्टि से भगवान की ओर देखकर कहा कि तीनों जगत में इनके समान दूसरा बलवान् नहीं है, ये गिरिराज को अनायास ही कंपायमान कर सकते हैं, यथार्थ में ये जिनेंद्र हैं इनसे उत्कृष्ट दूसरा कौन हो सकता है?

इस प्रकार वचन सुनकर श्रीकृष्ण ने भगवान से कहा – भगवन्! यदि

आपके शरीर का ऐसा उत्कृष्ट बल है तो बाहुयुद्ध में उसकी परीक्षा क्यों न ली जाये? भगवान ने कहा-हे अग्रज! यदि आपको मेरी भुजाओं का बल जानना ही है तो मल्लयुद्ध की क्या आवश्यकता है? सहसा इस आसन से मेरे इस पैर को ही विचलित कर दीजिये। श्रीकृष्ण उसी समय कमर कसकर जिनेंद्र भगवान को जीतने की इच्छा से उठ खड़े हुए परन्तु पैर का चलाना तो दूर ही रहा वे एक अंगुली को भी नहीं हिला सके। वे पसीने से लथपथ हो गये, उनके मुख से गरम-गरम सांसें निकलने लगीं। तब उन्होंने अहंकार छोड़कर स्पष्ट शब्दों में कहा-हे देव! आपका बल लोकोत्तर एवं आश्चर्यकारी है। उसी समय इन्द्र का आसन कंपित होने से देवों सहित इन्द्र ने आकर भगवान की अनेकों स्तुतियों से स्तुति और पूजा की। तदनंतर सब अपने-अपने महलों में चले गये। उसी समय से श्रीकृष्ण के मन में यह आशंका हो गई कि इन बलशाली जिनेंद्र के रहते हुए मेरा राज्यशासन स्थिर कैसे रहेगा?

नेमिनाथ का वैराग्य—

किसी समय मनोहर नामक उद्यान में भगवान नेमिनाथ तथा सत्यभामा आदि जलकेलि कर रहे थे। स्नान के अनंतर श्री नेमिनाथ ने सत्यभामा से कहा-हे नीलकमल के समान नेत्रों वाली! तू मेरा यह स्नान का वस्त्र ले। सत्यभामा ने कहा, मैं इसका क्या करूँ? नेमिनाथ ने कहा कि तू इसे धो डाल। तब सत्यभामा कहने लगी क्या आप श्रीकृष्ण हैं? वे श्रीकृष्ण, जिन्होंने कि नागशय्या पर चढ़कर शाङ्र्ग नाम का धनुष अनायास ही चढ़ा दिया था और दिग्दिगंत को व्याप्त करने वाला शंख पूरा था? क्या आप में यह साहस है? यदि नहीं तो आप मुझसे वस्त्र धोने की बात क्यों करते हैं?

नेमिनाथ ने कहा कि 'मैं यह कार्य अच्छी तरह कर दूँगा' इतना कहकर वे आयुधशाला में पहुँच गये। वहाँ नागराज के महामणियों से सुशोभित नागशय्या पर अपनी ही शय्या के समान चढ़ गये और शाङ्र्ग धनुष चढ़ाकर समस्त दिशाओं के अंतराल को रोकने वाला शंख फूंक दिया। उस समय श्रीकृष्ण अपनी कुसुमचित्रा सभा में विराजमान थे। वे सहसा ही यह आश्चर्यपूर्ण काम सुनकर व्यग्र हो उठे। बड़े आश्चर्य से किंकरों से पूछा कि यह क्या है?

किंकरों ने भी पता लगा कर सारी बात बता दी।

उस समय अर्धचक्री श्रीकृष्ण ने विचार करते हुये कहा कि आश्चर्य है, बहुत समय बाद कुमार नेमिनाथ का चित्त राग से युक्त हुआ है। अब इनका विवाह करना चाहिए। वे शीघ्र ही जूनागढ़ के राजा उग्रसेन के घर स्वयं पहुँच गये और रानी जयावती से उत्पन्न राजीमती कन्या की श्री नेमिनाथ के लिए याचना की। राजा उग्रसेन ने कहा हे देव! आप तीन खण्ड के स्वामी हैं अतः आपके सामने हम लोग कौन होते हैं? फिर भी नारायण के कहने पर शुभ मुहूर्त में विवाह निश्चित हो गया। अनंतर श्रीकृष्ण ने बड़े-बड़े शिकारियों द्वारा तमाम मृगों का समूह एक स्थान पर इकट्ठा करवा दिया और उसके चारों ओर बाड़ लगवा दी। उनके रक्षकों को नियुक्त कर दिया।

तदनंतर देवों द्वारा लाये गये नाना प्रकार के वस्त्राभूषणों से सुसज्जित भगवान नेमिनाथ, समान वय वाले अनेक मंडलेश्वर राजपुत्रों से घिरे हुये चित्रा नाम की पालकी पर आरूढ़ होकर दिशाओं का अवलोकन करने के लिए निकले। वहाँ उन्होंने करुण स्वर से चिल्लाते हुये और इधर-उधर दौड़ते हुए, भूख, प्यास से व्याकुल हुए तथा अत्यंत भयभीत हुए, दीनदृष्टि से युक्त मृगों को देख दयावश वहां के रक्षकों से पूछा कि यह पशु समूह क्यों इकट्ठा किया गया है? नौकरों ने कह दिया कि आपके विवाह में ये मारे जायेंगे। उसी समय श्री नेमिकुमार को पशुओं के प्रति अत्यधिक करुणा जाग्रत हो गई और शीघ्र ही भोगों से वैराग्य उत्पन्न हो गया। उन्होंने अपने अवधिज्ञान से श्रीकृष्ण के इस कार्य को जान लिया और विरक्त चित्त हुए लौटकर अपने घर वापस आ गये। अपने पूर्व भवों का स्मरण कर भयभीत हो गये। अब तक प्रभु के कुमार काल के तीन सौ वर्ष व्यतीत हो चुके थे।

तत्क्षण ही लौकांतिक देवों से पूजा को प्राप्त हुए प्रभु को देवों ने देवकुरु नाम की पालकी पर बिठाया और सहस्राम्र वन में ले गये। श्रावण कृष्णा षष्ठी के दिन सायंकाल के समय तेला का नियम लेकर एक हजार राजाओं के साथ जैनेश्वरी दीक्षा से विभूषित हो गये। उसी समय उन्हें चौथा मनःपर्ययज्ञान प्रगट हो गया।

राजीमती भी प्रभु के पीछे तपश्चरण के लिए चली गई सो ठीक ही है

क्योंकि शरीर की बात तो दूर ही रही, वचनमात्र से भी दी हुई कुलस्त्रियों का यही न्याय है।

राजा वरदत्त ने पड़गाहन करके प्रभु नेमिनाथ महामुनिराज को प्रथम आहार दिया जिसके फलस्वरूप पंचाश्चर्य को प्राप्त हो गये अर्थात् देवों ने साढ़े बारह करोड़ रत्न वर्षाये, पुष्पवृष्टि, मन्द सुगन्ध वायु, दुन्दुभी बाजे और अहोदानम् आदि प्रशंसा वाक्य होने लगे।

इस प्रकार तपश्चर्या करते हुये प्रभु के छद्मस्थ अवस्था के छप्पन दिन व्यतीत हो गये तब वे रैवतक पर्वत पर पहुँचे, तेला का नियम लेकर किसी बड़े भारी बाँस वृक्ष के नीचे विराजमान हो गये। आश्विन कृष्णा प्रतिपदा के दिन चित्रा नक्षत्र में प्रातः काल के समय प्रभु को लोकालोकप्रकाशी केवलज्ञान प्रकट हो गया। उनके समवसरण में वरदत्त को आदि लेकर ग्यारह गणधर थे, अठारह हजार मुनि, राजीमती आदि चालीस हजार आर्यिकाएं, एक लाख श्रावक और तीन लाख श्राविकाएं थीं। भगवान की सभा में बलभद्र और श्रीकृष्ण जैसे महापुरुष आये। धर्म का स्वरूप सुना और अपने सभी भव-भवांतर पूछे।

किसी समय भगवान की दिव्यध्वनि से यह बात मालूम हुई कि 'द्वीपायन मुनि के क्रोध के निमित्त से द्वारावती नगरी का विनाश होगा' इस भावी दुर्घटना को सुनकर कितने ही महापुरुषों ने जैनेश्वरी दीक्षा ग्रहण कर ली थी। इस प्रकार प्रभु नेमिनाथ ने छह सौ निन्यानवे वर्ष, नौ महीना और चार दिन तक विहार किया था।

अनन्तर गिरनार पर्वत पर जाकर विहार छोड़कर पाँच सौ तेंतीस मुनियों के साथ एक महीने का योग निरोध करके आषाढ़ शुक्ला सप्तमी के दिन चित्रा नक्षत्र में रात्रि के प्रारम्भ में ही प्रभु ने अघातिया कर्मों का नाशकर मोक्षपद प्राप्त कर लिया। उसी समय इंद्रादि देवों ने आकर बड़ी भक्ति से प्रभु का परिनिर्वाण कल्याणक महोत्सव मनाया। वे श्री नेमिनाथ भगवान हमारे अंतःकरण को पूर्णशांति प्रदान करें। इसी भावना के साथ भगवान के श्रीचरणों में कोटि-कोटि नमन है।

तीर्थंकर नेमिनाथ जन्मभूमि

शौरीपुर तीर्थ का परिचय

—प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

जैनधर्म के बाइसवें तीर्थंकर भगवान नेमिनाथ की जन्मस्थली ''शौरीपुर'' उत्तर प्रदेश के आगरा जिले में है। यह तीर्थ यमुना तट पर बसा हुआ है। यह स्थल सिद्धक्षेत्र के रूप में प्रसिद्धि को प्राप्त हुआ है क्योंकि यहाँ से अनेक मुनियों ने निर्वाणधाम को प्राप्त किया था।

शौरीपुर में माता शिवादेवी और पिता समुद्रविजय से श्रावण शुक्ला षष्ठी में श्री नेमि जिनेन्द्र उत्पन्न हुए थे।

हरिवंशपुराण में भी कथन आया है—

जिनस्य नेमित्रिदिवावतारतः, पुरैव षण्मासपुरस्सरा सुरैः।
प्रवर्तिता तज्जननावधिगृहे, हिरण्यवृष्टिः पुरुहूतशासनात् ।।

अर्थ—भगवान् नेमिनाथ के स्वर्गावतार से छह माह पहले से लेकर जन्म पर्यंत पन्द्रह मास तक इन्द्र की आज्ञा से शौरीपुर निवासी राजा समुद्रविजय के घर देवों ने रत्नों की वर्षा की थी।

उपर्युक्त उल्लेखों से स्पष्ट है कि बाइसवें तीर्थंकर श्री नेमिनाथ ने शौरीपुर नगर में राजा समुद्रविजय के यहाँ जन्म लिया, इसके उपलक्ष्य में इन्द्रों और देवों ने भगवान के गर्भ और जन्मकल्याणकों का महान् उत्सव शौरीपुर में मनाया था। भगवान के इन दो कल्याणकों के कारण यहाँ की भूमि अत्यन्त पावन हो गई, जिससे आज इसे तीर्थ के रूप में माना जाता है।

भगवान के इन दो कल्याणकों के अतिरिक्त यहाँ पर कई अन्य मुनियों को केवलज्ञान और निर्वाणप्राप्ति के उल्लेख भी पौराणिक साहित्य में उपलब्ध होते हैं।

शौरीपुर में गन्धमादन नामक पर्वत पर रात्रि के समय सुप्रतिष्ठ नामक मुनिराज ध्यानमुद्रा में विराजमान थे। सुदर्शन नामक एक यक्ष ने पूर्व जन्म के विरोध के कारण मुनिराज पर घोर उपसर्ग किया। मुनिराज अविचल रहे, अनन्तर उन्हें केवलज्ञान की प्राप्ति हो गई।

हरिवंशपुराण में वर्णन आया है कि कुछ समय पश्चात् शौरीपुर नरेश

अन्धकवृष्टि और मथुरा नरेश भोजकवृष्टि ने इन्हीं केवली भगवान् के निकट मुनि दीक्षा ले ली।

इसी प्रकार से आराधना कथा कोष में एक कथा आई है –

अमलकण्ठपुर के राजा निष्ठसेन के पुत्र धन्य ने भगवान नेमिनाथ के उपदेश से मुनिदीक्षा धारण कर ली। एक दिन विहार करते हुए मुनि ''धन्य'' शौरीपुर पधारे, वहाँ यमुनातट पर वे ध्यानारूढ़ हो गये। शौरीपुर का राजा शिकार से लौटा, शिकार न मिलने के कारण वह मन में बड़ा खिन्न हो रहा था। मुनिराज को देखते ही उसे लगा कि हो न हो, इस नग्न मुनि के कारण ही मुझे सारे दिन भटकने पर भी शिकार नहीं मिल पाया। यह सोचकर अपने निराशाजनक क्रोध के कारण उस मूर्ख ने उन वीतराग मुनि को तीक्ष्ण बाणों से बींध दिया। मुनि धन्य शुक्ल ध्यान द्वारा कर्मों को नष्ट कर सिद्धपद को प्राप्त हुए। उस समय इन्द्रों ने उनका निर्वाण महोत्सव मनाया।

एक ''अलसत्कुमार'' नाम के मुनि ने भी शौरीपुर से मोक्षपद प्राप्त किया तथा भगवान महावीर के समय ''यम'' मुनिराज भी अन्तःकृत केवली होकर यहीं से मोक्ष गए हैं। यह स्थान दानी कर्ण की जन्मभूमि है। प्रसिद्ध दार्शनिक विद्वान् आचार्य प्रभाचन्द्र के गुरु आचार्य लोकचन्द्र यहीं हुए थे। आचार्य प्रभाचन्द्र ने जैन न्याय के सुप्रसिद्ध ग्रंथ प्रमेयकमल मार्तण्ड की रचना यहीं पर की थी इस प्रकार की अनुश्रुति है।

श्री शौरीपुर की प्राचीन समृद्धि निर्विवाद है। इतिहासरत्न डा. ज्योतिप्रसाद के अनुसार 19वीं सदी के पूर्वार्द्ध में कर्नल टॉड और उसी सदी के अन्तिम चरण में जनरल कनिंघम और उनके सहयोगी कार्लायल ने यहाँ के खण्डहरों का सर्वेक्षण किया था और सिद्ध किया था कि प्राचीन काल में यह नगरी अत्यन्त समृद्धिशाली थी। यहाँ पर अनेक बार हीरे के नग तथा ऐतिहासिक मुद्राएं आदि मिलने की बात सुनी व लिखी गई हैं। अनेक दिगम्बर जैन मूर्तियाँ और चिन्यहाँ प्राप्त हुए हैं। मध्यकाल में 19वीं सदी तक यहाँ दिगम्बर जैन भट्टारकों की गद्दी रही है। उनकी धार्मिक चर्चाओं और सिद्धियों से जनता बहुत प्रभावित थी।

मूलतः यह दिगम्बर जैन तीर्थ है। जितने प्राचीन मंदिर, मूर्तियाँ और चरण हैं सभी दिगम्बर परम्परा के हैं। आसपास के जैन स्त्री पुरुष यहाँ मुण्डन, कर्णबेधन आदि संस्कार कराने आते हैं। यह क्षेत्र मूल संघाम्नायी भट्टारकों का स्थान रहा है। भट्टारक जगतभूषण और विश्वभूषण की परम्परा में

अठारहवीं शताब्दी में जिनेन्द्र भूषण भट्टारक हुए हैं, ये मंत्रवेत्ता सिद्धपुरुष थे। इनके चमत्कारों के संबंध में अनेककिंवदन्तियाँ अब तक प्रचलित हैं। उन्होंने भिण्ड, ग्वालियर, आरा,पटना, सम्मेदशिखर, सोनागिरि, मसाड़ आदि कई स्थानों पर विशाल मंदिर तथा धर्मशालाएं बनवाईं, जो अब तक विद्यमान हैं।

वर्तमान में शौरीपुर और बटेश्वर दो अलग-अलग तीर्थ हैं। यह शौरीपुर से मात्र 3 किमी. दूर है तथा यहाँ ग्राम पंचायत का मुख्यालय है।

बटेश्वर के दिगम्बर जैन मंदिर के विषय में कहा जाता है कि जब शौरीपुर यमुना नदी के तट से अधिक कटने लगा और बीहड़ हो गया, तब उक्त भट्टारक जी ने बटेश्वर में विशाल मंदिर और धर्मशाला बनवाई। यह मंदिर महाराज बदनसिंह द्वारा निर्मापित घाट के ऊपर वि. सं.1838 में तीन मंजिल का बनवाया गया था। उसकी दो मंजिलें जमीन के नीचे हैं। इस मंदिर में महोबा से लाई हुई भगवान् अजितनाथ की पांच फुटी ऊँची कृष्ण पाषाण की सातिशय पद्मासन प्रतिमा विराजमान है। उसकी प्रतिष्ठा संवत् 1224 वैशाख वदी 7 सोमवार को परिमाल राज्य में आल्हा ऊदल के पिता जल्हड़ ने करायी थी।

यह जनश्रुति यहाँ की प्रसिद्ध है कि उपर्युक्त अजितनाथ की विशाल प्रतिमा जी महोबा से पालकी में विराजमान होकर आकाशमार्ग से बटेश्वर पधारी थीं। यहाँ अनेक प्राचीन मूर्तियाँ भी विराजमान हैं। इनमें भगवान् श्री शांतिनाथ की सं. 1150 (ई. 1093) की प्रतिष्ठित एक खड्गासन मूर्ति भी हैं, जिसकी छवि बड़ी मनोहारी है।

जैन मान्यतानुसार शौरीपुर का इतिहास महाभारत काल से भी कुछ पूर्व से प्रारंभ होता है। इस जैन मान्यता का समर्थन भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग की ओर से मार्च सन् 1972 में किये गये सर्वेक्षण से भी होता है जो कि श्री जगदीशसहाय निगम ने किया था। एक बार क्षेत्र कमेटी ने आदि मंदिर के दक्षिण की ओर एक टीले की खुदाई कराई थी, फलतः उसमें अनेक सांगोपांग तथा खण्डित जैन प्रतिमाएं निकली थीं।

वर्तमान में यहाँ आगरा के सक्रिय कार्यकर्ताओं द्वारा क्षेत्र के जीर्णोद्धार एवं विकास की अच्छी योजनाएं चल रही हैं। मार्च 2002 में पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी का संघ सहित इस तीर्थ पर मंगल पदार्पण हुआ, उस समय उन्होंने कमेटी के लोगों को शौरीपुर तीर्थ विकास की सुन्दर रूपरेखा बताईथी।

भगवान नेमिनाथ की जन्मभूमि इस पावन तीर्थ शौरीपुर को शत शत नमन।

श्री गिरनार जी तीर्थक्षेत्र का परिचय

लेखक—पीठाधीश क्षुल्लक मोतीसागर

गुजरात प्रान्त में स्थित गिरनार पर्वत एक निर्वाणक्षेत्र के रूप में सुप्रसिद्ध तीर्थ है। षट्खण्डागम सिद्धान्तशास्त्र की आचार्य वीरसेन कृत धवला टीका में इसे क्षेत्र मंगल माना है। इसे ऊर्जयन्त गिरि भी कहते हैं। आचार्य यतिवृषभ ने भी तिलोयपण्णत्ति नामक ग्रंथ में इसी आशय की पुष्टि करते हुए इसे क्षेत्र मंगल माना है।

ऊर्जयन्त क्षेत्र पर बाईसवें तीर्थंकर नेमिनाथ के तीन कल्याणक हुए थे- दीक्षा, केवलज्ञान और निर्वाण। जिस क्षेत्र पर किसी तीर्थंकर का एक ही कल्याणक हो वह कल्याणक क्षेत्र या तीर्थक्षेत्र कहलाता है और जहाँ किसी तीर्थंकर के तीन कल्याणक हुए हों वह क्षेत्र तो वस्तुतः अत्यन्त पवित्र बन जाता है अतः गिरनार क्षेत्र अत्यन्त पावन तीर्थभूमि है। भगवान नेमिनाथ का निर्वाणस्थल होने से इसे सिद्धक्षेत्र कहा जाता है।

गिरनार पर्वत का नाम लेते ही महासती राजुल का नाम भी स्मृति में आ जाता है जब भगवान नेमिनाथ जूनागढ़ से गिरनार की ओर राजुलमती से ब्याह करने के लिए चले तो वहाँ पहुँचते हुए मार्ग में बाड़े में बंद पशुओं की करुण चीत्कार ने उन्हें द्रवित कर दिया तब वे वैराग्य उत्पन्न हो जाने से विवाह बंधन में न फंसकर गिरनार पर्वत पर जाकर दीक्षा ले घोर तपश्चरण में लीन हो गए तब महासती राजुल ने भी भगवान नेमिनाथ के पथ का अनुसरण करते हुए आर्यिका दीक्षा ग्रहण कर इसी पर्वत पर घोर तपश्चरण किया था। इसी पर्वत पर भगवान नेमिनाथ के तीन कल्याणकों का वर्णन तिलोयपण्णत्ति नामक ग्रंथ में विस्तारपूर्वक दिया गया है। भगवान के निर्वाण की तिथि आदि का उल्लेख करते हुए उन्होंने लिखा है—

बहुलट्ठमी पदोसे आसाढ़े जम्मभम्मि उज्जंते।
छत्तीसाधिय पणसयसहिदो णेमीसरो सिद्धो।।

अर्थात् भगवान नेमीश्वर आषाढ़ कृष्णा अष्टमी के दिन प्रदोषकाल में अपने जन्म नक्षत्र के रहते 536 मुनियों के साथ ऊर्जयन्त गिरि से सिद्ध हुए।

भगवान का निर्वाण होने पर असंख्य देवों, इन्द्रों और मनुष्यों ने

निर्वाणकल्याणक महोत्सव मनाया। तब से इस पर्वत की ख्याति एक प्रसिद्ध सिद्धक्षेत्र के रूप में हो गई है।

इस क्षेत्र पर भगवान नेमिनाथ के अतिरिक्त प्रद्युम्न, शम्बुकुमार, अनिरुद्ध कुमार आदि 72 करोड़ 700 मुनियों ने ऊर्जयन्त गिरि से सिद्धिपद प्राप्त किया। ऊर्जयन्त गिरि से अनेक मुनि मोक्ष गए हैं इसका समर्थन हरिवंशपुराण से भी होता है। इस संबंध में आचार्य जिनसेन ने मुनियों के कुछ नाम देकर यह भी सूचित किया है कि इन मुनियों आदि के निर्वाण के कारण ही ऊर्जयन्त को निर्वाण क्षेत्र माना जाने लगा और अनेक भव्यजन तीर्थयात्रा के लिए आने लगे। आचार्य गुणभद्रकृत उत्तरपुराण में प्रद्युम्न आदि मुनियों के संबंध में ऊर्जयन्त गिरि से निर्वाणप्राप्ति के साथ जिन कूटों से उन्होंने निर्वाण प्राप्त किया था उसकी भी सूचना दी गई हैं।

इसी पर्वत से गजकुमार मुनि ने निर्वाण की प्राप्ति की। हरिवंशपुराण में वर्णित कथा में गजकुमार मुनि के मुक्तिस्थान का उल्लेख नहीं किया गया किन्तु हरिषेणकृत बृहत्कथाकोष में स्थान का स्पष्ट उल्लेख मिलता है। इस प्रकार गिरनार पर्वत से करोड़ों मुनियों को निर्वाण प्राप्त हुआ अतः वह निर्वाणक्षेत्र या सिद्धक्षेत्र है।

भगवान नेमिनाथ जिस स्थान से मुक्त हुए थे वह स्थान अत्यन्त पवित्र और लोकपूज्य था। उस स्थान के गौरव को सदाकाल के लिए अक्षुण्ण बनाए रखने के लिए इन्द्र ने वज्र से सिद्धशिला का निर्माण किया और उस पर भगवान के चरण चिन्ह उत्कीर्ण किए। इस आशय की सूचना आचार्य जिनसेन ने 'हरिवंशपुराण' (सर्ग 65, श्लोक 14) में दी है। उन्होंने लिखा है—

'ऊर्जयन्तगिरौ वज्री वज्रेणालिख्य पाविनीम्।
लोके सिद्धिशिलां चक्रे जिनलक्षणपङ्क्तिभिः।।''

इसके अतिरिक्त आचार्य दामनन्दी कृत पुराणसारसंग्रह एवं आचार्य समन्तभद्र स्वामी रचित स्वयंम्भूस्तोत्र में इस बात का उल्लेख किया गया है।

इन्द्र ने जिस प्रकार भक्तिवश वज्र से भगवान के चिन्ह अंकित किए थे उसी प्रकार उसने भक्तिवश गिरनार पर्वत पर भगवान नेमिनाथ की भव्य मूर्ति भी स्थापित की थी जिसका वर्णन आचार्य मदनकीर्ति यतिपति ने 'शासन चतुस्त्रिंशतिका'' में किया है। इन्द्र द्वारा स्थापित उस मूर्ति का क्या हुआ, इसका कुछ पता नहीं

चलता किन्तु श्वेताम्बर आचार्य राजशेखरसूरिकृत 'प्रबन्धकोष' (वि.सं. 1405) में रत्नश्रावक संबंधी एक प्रबंध में काश्मीर देश के नवहुल्ल पत्तन निवासी रत्न नामक जैन श्रीमंत द्वारा संघ सहित यात्रा करने का वर्णन आता है जिन्होंने नेमिनाथ भगवान की अति प्राचीन मूर्ति के दर्शन के साथ उनका जलाभिषेक किया। प्रतिमा लेप की होने से वह गल गई जिससे उन्हें बड़ा पश्चाताप हुआ, उन्होंने उपवास किया। तब रात्रि में अम्बिका देवी ने प्रकट होकर उन्हें अन्य प्रतिमा स्थापित करने का आदेश दिया तदनुरूप रत्नश्रावक ने 18 सोने की, 18 चांदी की और 18 पाषाण की प्रतिमाएं बनवाईं। यदि इस प्रकरण को प्रामाणिक स्वीकार किया जाए तो मदनकीर्ति (वि.स.1285) ने नेमिनाथ की जिस भव्य दिगम्बर मूर्ति का उल्लेख किया है वह वि.सं. 1405 में लिखित 'प्रबंधकोष' के अनुसार रत्न नामक यात्री के हाथों नष्ट हुई। इससे लगता है कि मदनकीर्ति के द्वारा उल्लिखित मूर्ति वि.सं. की 14-15 वीं शताब्दी तक अवश्य विद्यमान थी। संभव है, मदनकीर्ति ने उसके दर्शन भी किए हों किन्तु इतना तो निश्चित है ही कि वह मूर्ति दिगम्बर थी और अत्यन्त आकर्षक थी।

गिरनार के दूसरे शिखर पर अम्बा या अम्बिका देवी का मंदिर है। इस मंदिर की मान्यता जैनों और हिन्दुओं दोनों में ही है। मंदिर पर आजकल हिन्दुओं का अधिकार है। The Report on the Antiquities of Kathiawad and Kachha, P. 129 में Mr. Burgess ने मूलतः इस मंदिर को जैनों का बताया है। अम्बिका देवी के कई नाम जैन शास्त्रों में मिलते हैं-कूष्माण्डी, कूष्माण्डिनी, आम्रा देवी, अम्बा देवी, अम्बिका देवी। यह देवी तीर्थंकर नेमिनाथ की शासन देवी कहलाती हैं। आचार्य जिनसेन ने 'हरिवंशपुराण' (सर्ग 66, श्लोक 44) में गिरनार की अम्बिका देवी के संबंधमें विशेष उल्लेख किया है। अम्बिका देवी की मूर्तियाँ बहुसख्या में प्राप्त होती हैं। इस देवी का मुख्य चिन्ह यह है-सिंहारूढ़ देवी की गोद में एक बालक होता है तथा एक बालक बगल में खड़ा होता है। देवी आम्रवृक्ष के नीचे बैठी होती है अथवा वृक्ष नहीं होता तो हाथ में आम्रस्तवक रहता है। देवी के शिरोभाग पर भगवान नेमिनाथ की पद्मासन प्रतिमा बनी होती है।

गिरनार पर अनेक पौराणिक और ऐतिहासिक घटनाएं घटित हुई हैं, जिनका विशेष महत्व है। चतुर्थ श्रुतकेवली गोवर्धनाचार्य गिरनार की यात्रा

के लिए गए थे। अंतिम श्रुतकेवली भद्रबाहु ने भी यहाँ की यात्रा की थी। इनके पश्चात् एक महत्वपूर्ण घटना का गिरनार के साथ संबंध है, जिसके द्वारा जैन वाङ्मय का इतिहास जुड़ा हुआ है। वह घटना इस प्रकार है–

गिरनार की चन्द्रगुफा में स्थित धरसेनाचार्य नन्दिसंघ की प्राकृत 'पट्टावली' के अनुसार आचारांग के पूर्ण ज्ञाता थे। उन्हें इस बात की चिंता हुई कि उनके पश्चात् श्रुतज्ञान का लोप हो जाएगा, उस समय महिमानगरी में मुनि सम्मेलन हो रहा था। उन्होंने मुनि सम्मेलन को अपनी चिन्ता व्यक्त करते हुए एक पत्र लिखा फलस्वरूप व्युत्पन्न और विनयी दो मुनि पुष्पदंत और भूतबलि विद्या ग्रहण हेतु उनके पास पहुँचे, तब आचार्यश्री ने उनकी परीक्षा लेकर उन्हें सिद्धान्त सीखने योग्य समझकर ग्रंथ पढ़ा दिया जिसके फलस्वरूप षट्खण्डागम नामक महान ग्रंथ की रचना हुई, इस प्रकार सिद्धान्त ग्रंथों की विद्याभूमि गिरनार ही है। पुष्पदंत और भूतबलि ने गिरनार की सिद्धशिला पर बैठकर, जहाँ भगवान नेमिनाथ को मुक्ति प्राप्त हुई थी, मंत्र सिद्धि की थी। आचार्य कुन्दकुन्द भी गिरनार की वंदना करने आए थे ऐसा वर्णन ज्ञान प्रबोध एवं पाण्डवपुराण ग्रंथ में आता है।

इसके अतिरिक्त सुगंधदशमी व्रत का कथानक भी यहीं से जुड़ा है।

ऊर्जयन्त पर्वत दिगम्बर परम्परा में तीर्थराज माना गया है। अनन्तानंत तीर्थंकरों एवं मुनियों की निर्वाणभूमि होने से जहाँ सम्मेदशिखर को तीर्थराज की संज्ञा दी गई है वहीं ऊर्जयन्तगिरि से 72 करोड़ 700 मुनियों की मुक्ति और तीर्थंकर नेमिनाथ के तीन कल्याणक होने से सम्मेदशिखर के बाद इस तीर्थ का नाम आता है।

श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र गिरनार पर्वत के ऊपर पाँच टोंके हैं। लगभग दो मील की चढ़ाई चढ़ने पर दिगम्बर मंदिर और धर्मशाला से कुछ पहले राजुल गुफा है। इस गुफा से आगे बढ़ने पर दिगम्बर जैन धर्मशाला है इसके आगे अहाते में 3 मंदिर और एक छतरी है। एक मन्दरिया में 4 फुट ऊँची खड्गासन भगवान बाहुबली की प्रतिमा है। पार्श्व में एक छतरी में कुन्दकुन्दाचार्य के चरण हैं, सामने दीवार में पंचपरमेष्ठी की 5 मूर्तियाँ बनी हैं। छतरी के पार्श्व में एक जिनमंदिर है। अहाते के प्रांगण में बड़ा मंदिर बना हुआ है। दिगम्बर मंदिर से थोड़ा आगे बढ़ने पर गोमुखी गंगा है, एक गोमुख से जलधारा निकलते रहने से जल से कई

कुण्ड बन गए हैं। गोमुख के पृष्ठ भाग में एक वेदी पर तीर्थंकरों के 24 चरणचिन्ह बने हुए हैं। यह प्रथम टोंक कहलाती है। इस पवित्र कल्याणक स्थान पर हिन्दुओं ने अधिकार कर रखा है। इस गोमुख गंगा के निकट ही सहस्राम्रवन (भगवान नेमिनाथ की दीक्षा भूमि) को मार्ग जाता है। यहाँ से कुछ आगे चलेन पर राखंगार के दुर्ग का द्वार मिलता है। द्वार के बायीं ओर नेमिनाथ का विशाल और दर्शनीय मंदिर है जो कि मूलतः दिगम्बर आम्नाय का था किन्तु अब उस पर श्वेताम्बरों का अधिकार है। 900 सीढ़ी चढ़कर द्वितीय टोंक है जहाँ अनिरुद्ध कुमार के चरण हैं, इसके निकट ही अम्बा देवी का विशाल मंदिर है। तीसरी टोंक शम्बुकुमार की है। तीसरी टोंक से 1500 सीढ़ियाँ चढ़ने और उतरने पर चौथा टोंक है। इस पर्वत पर चढ़ने के लिए सीढ़ियाँ नहीं हैं, खड़ा पहाड़ है। चढ़ाइ कठिन है किन्तु यात्री साहस व परिश्रम से थोड़ा कष्ट सहकर चढ़ सकते हैं। पर्वत की चोटी पर शिला में प्रद्युम्न कुमार के चरण बने हैं, चरणों के निकट ही एक फुट ऊँची मूर्ति बनी हुई है। पाँचवी टोंक पर भगवान नेमिनाथ के चरण हैं जिन्हें हिन्दू लोग दत्तात्रेय कहते हैं, चरणों के पीछे भगवान नेमिनाथ की भव्य दिगम्बर प्रतिमा विराजमान हैं, यह पाँचों टोंक व नेमिनाथ मंदिर सरकार के पुरातत्त्व विभाग के अधिकार में है।

यहाँ से गये हुए मार्ग से ही वापस लौटकर सहस्राम्रवन (प्रथम टोंक) के लिए सीढ़ियाँ जाती हैं। इस दीक्षावन में एक छतरी के नीचे चरण बने हैं, यहाँ से कच्चा मार्ग धर्मशाला के लिए जाता है जो कि कष्टकर है अतः सीढ़ियों द्वारा ही मुख्य मार्ग से नीचे आना चाहिए।

नीचे तलहटी में दिगम्बर जैन धर्मशाला में एक जिनालय है, धर्मशाला में अनेक कमरे हैं और यात्रियों की सुविधा हेतु समुचित व्यवस्था है। आचार्यश्री निर्मलसागर महाराज की प्रेरणा से गिरनार तीर्थ का विकास हुआ है। वर्तमान में भी वहाँ "निर्मलध्यान केन्द्र" नामक संस्था के द्वारा नवनिर्माण आदि कार्य चल रहे हैं। पहाड़ के ऊपर प्रथम टोंक पर बनी धर्मशाला में 6 कमरे हैं। इसी प्रकार जूनागढ़ में भी ऊपर कोट के निकट क्षेत्र की एक धर्मशाला है इसमें भी यात्री हेतु सभी सुविधाएं हैं। क्षेत्र कार्यालय जूनागढ़ के जगमाल चौक में है। इस प्रकार भगवान नेमिनाथ की त्रयकल्याणक भूमि व अनेक मुनियों की सिद्धभूमि सभी के लिए कल्याणकारी होवे यही भावना है।

नवदेवता पूजन

—गणिनी आर्यिका ज्ञानमती

—गीता छन्द—

अरिहंत सिद्धाचार्य पाठक, साधु त्रिभुवन वंद्य हैं।
जिनधर्म जिनआगम जिनेश्वर, मूर्ति जिनगृह वंद्य हैं।।
नव देवता ये मान्य जग में, हम सदा अर्चा करें।
आह्वान कर थापें यहाँ, मन में अतुल श्रद्धा धरें।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्मजिनागमजिन-चैत्यचैत्यालयसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्मजिनागमजिन-चैत्यचैत्यालयसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्मजिनागमजिन-चैत्यचैत्यालयसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधीकरणं।

—अथाष्टक—

गंगानदी का नीर निर्मल, बाह्य मल धोवे सदा।
अंतर मलों के क्षालने को, नीर से पूजूँ मुदा।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिन-चैत्यचैत्यालयेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूर मिश्रित गंध चंदन, देह ताप निवारता।
तुम पाद पंकज पूजते, मन ताप तुरतहिं वारता।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिन-चैत्यचैत्यालयेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षीरोदधी के फेन सम सित, तंदुलों को लायके।
उत्तम अखंडित सौख्य हेतु, पुंज नव सुचढ़ायके।।

नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिन-चैत्यचैत्यालयेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

चम्पा चमेली केवड़ा, नाना सुगन्धित ले लिये।
भव के विजेता आपको, पूजत सुमन अर्पण किये।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिन-चैत्यचैत्यालयेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पायस मधुर पकवान मोदक, आदि को भर थाल में।
निज आत्म अमृत सौख्य हेतू, पूजहूँ नत भाल मैं।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिन-चैत्यचैत्यालयेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूर ज्योति जगमगे, दीपक लिया निज हाथ में।
तुम आरती तम वारती, पाऊँ सुज्ञान प्रकाश मैं।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिन-चैत्यचैत्यालयेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दशगंधधूप अनूप सुरभित, अग्नि में खेऊँ सदा।
निज आत्मगुण सौरभ उठे, हों कर्म सब मुझसे विदा।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिन-चैत्यचैत्यालयेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अंगूर अमरख आम्र अमृत, फल भराऊँ थाल में।
उत्तम अनूपम मोक्ष फल के, हेतु पूजूँ आज मैं।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिन-चैत्यचैत्यालयेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंध अक्षत पुष्प चरु, दीपक सुधूप फलार्घ्य ले।
वर रत्नत्रय निधि लाभ यह, बस अर्घ्य से पूजत मिले।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिन-चैत्यचैत्यालयेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा – **जलधारा से नित्य मैं, जग की शांति हेत।**
नवदेवों को पूजहूँ, श्रद्धा भक्ति समेत।।10।।

शांतये शांतिधारा।

नानाविध के सुमन ले, मन में बहु हरषाय।
मैं पूजूँ नव देवता, पुष्पांजली चढ़ाय।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

***जाप्य –*ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागम जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो नमः।**

जयमाला

सोरठा – **चिच्चिंतामणिरत्न, तीन लोक में श्रेष्ठ हों।**
गाऊँ गुणमणिमाल, जयवंते वर्तो सदा।।1।।

(चाल-हे दीनबन्धु श्रीपति.....)

जय जय श्री अरिहंत देवदेव हमारे।
जय घातिया को घात सकल जंतु उबारे।।
जय जय प्रसिद्ध सिद्ध की मैं वंदना करूँ।
जय अष्ट कर्ममुक्त की मैं अर्चना करूँ।।2।।

आचार्य देव गुण छत्तीस धार रहे हैं।
दीक्षादि दे असंख्य भव्य तार रहे हैं।।
जैवंत उपाध्याय गुरु ज्ञान के धनी।
सन्मार्ग के उपदेश की वर्षा करें घनी।।3।।
जय साधु अठाईस गुणों को धरें सदा।
निज आत्मा की साधना से च्युत न हों कदा।।
ये पंचपरमदेव सदा वंद्य हमारे।
संसार विषम सिंधु से हमको भी उबारें।।4।।
जिनधर्म चक्र सर्वदा चलता ही रहेगा।
जो इसकी शरण ले वो सुलझता ही रहेगा।।
जिन की ध्वनि पीयूष का जो पान करेंगे।
भव रोग दूर कर वे मुक्ति कांत बनेंगे।।5।।
जिन चैत्य की जो वंदना त्रिकाल करे हैं।
वे चित्स्वरूप नित्य आत्म लाभ करे हैं।।
कृत्रिम व अकृत्रिम जिनालयों को जो भजें।
वे कर्मशत्रु जीत शिवालय में जा बसें।।6।।
नव देवताओं की जो नित आराधना करें।
वे मृत्युराज की भी तो विराधना करें।।
मैं कर्मशत्रु जीतने के हेतु ही जजूँ।
सम्पूर्ण ''ज्ञानमती'' सिद्धि हेतु ही भजूँ।।7।।

दोहा – नवदेवों को भक्तिवश, कोटि कोटि प्रणाम।
भक्ती का फल मैं चहूँ, निजपद में विश्राम।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं.....।

शांतिधारा, पुष्पांजलिः।

–गीता छंद –

जो भव्य श्रद्धाभक्ति से, नवदेवता पूजा करें।
वे सब अमंगल दोष हर, सुख शांति में झूला करें।।
नवनिधि अतुल भंडार ले, फिर मोक्ष सुख भी पावते।
सुखसिंधु में हो मग्न फिर, यहाँ पर कभी न आवते।।9।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

भगवान नेमिनाथ विधान

–मंगलाचरण –

राजीमतिं परित्यज्य, महादयार्द्रमानसः।
लेभे सिद्धिवधूं सिद्ध्यै, नेमिनाथ! नमोऽस्तु ते।।

शार्दूलविक्रीडित छंद –

यावन्नो प्रभवेच्च नेमि भगवन्! तेंऽघ्रिप्रसादोदयः।
तावद्दुःखमुपैति जीवनिवहः, तावत्सुखं नाश्नुते।।
यावद्भक्तिरतस्य मे नहि भवेद्, दृष्टिः प्रसन्ना प्रभोः।
तावद्धि प्रभवेत् स तापजनको, दुर्वारकर्मोदयः।।

प्रमदानन छंद –

भववारिधौ ब्रुडता मया कथमप्यवाप्य सुशर्मदां।
व्रतशीलसंयमसंपदं त्वधुना प्रमाद इहास्तु मा।।
प्रभु नेमिनाथ! प्रयच्छ शांतिमभीप्सितामविनश्वरीं।
प्रणमाम्यहं जिनपुंगवं सितशंखचिन्हसमन्वितम्।।

ॐ ह्रीं जिनयज्ञप्रतिज्ञापनाय मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

श्री नेमिनाथ वंदना

भव वन में भ्रमते-भ्रमते अब, मुझको कथमपि विज्ञान मिला।
हे नेमि प्रभो! अब नियम बिना, नहिं जाने पावे एक कला।।
मैं निज से पर को पृथक् करूँ, निज समरस में ही रम जाऊँ।
मैं मोह ध्वांत को नाश करूँ, निज ज्ञान सूर्य को प्रकटाऊँ।।1।।

शौरीपुरि में प्रभु जन्में तक, रत्नों की वर्षा खूब हुई।
धन धन्य समुद्रविजय राजा, कृतकृत्य शिवादेवी भी थी।।
कार्तिक सुदि छठ के गर्भागम, श्रावण सुदि छट्ठ जन्म लीना।
यौवन में राजमती के संग, परिजन ने ब्याह रचा दीना।।2।।

पशु बंधन को देखा प्रभु ने, तत्क्षण सब बंधन तोड़ दिया।
राजीमति मोह परिग्रह तज, तपश्री से नाता जोड़ लिया।।
श्रावण सुदि छट्ठ सुखद प्यारी, सिरसा वन में जा ध्यान धरा।
आश्विन सुदि एकम आते ही, कैवल्य श्री ने आन वरा।।3।।

तब राजमती जी दीक्षा ले, आर्या में गणिनी मान्य हुईं।
प्रभु ने शिव का पथ दर्शाया, धर्मामृत वर्षा खूब हुई।।
तनु चालिस हाथ प्रमाण कहा, प्रभु आयू एक हजार वर्ष।
वैडूर्य[1] मणी सम कांति अहो, प्रभु शंख चिन्ह से हैं चिह्नित ।।4।।

प्रभु समवसरण में कमलासन, पर चतुरंगुल से अधर रहें।
चउदिश में प्रभु का मुख दीखे, अतएव चतुर्मुख ब्रह्मा हैं।।
प्रभु के विहार में चरण कमल, तल स्वर्ण कमल खिलते जाते।
बहु कोसों तक दुर्भिक्ष टले, षट् ऋतुज फूल फल खिल जाते।।5।।

तरुवर अशोक था शोक रहित, सिंहासन रत्न खचित सुन्दर।
छत्रत्रय मुक्ताफल लंबित, भामंडल भवदर्शी मनहर।।
सुरदुंदुभि बाजे बाज रहें, ढुरते हैं चौंसठ श्वेत चमर।
सुर पुष्पवृष्टि नभ से बरसें, दिव्य ध्वनि फैले योजन भर।।6।।

आषाढ़ सुदी सप्तमि तिथि थी, प्रभु ऊर्जयंत से सिद्ध हुए।
श्रीकृष्ण तथा बलदेव आदि, तुम पूजें ध्यावें भक्ति लिए।।
हे भगवन्! तुम बाह्याभ्यंतर, अनुपम लक्ष्मी के स्वामी हो।
दो मुझे अनंतचतुष्टय श्री, 'सज्ज्ञानमती' सिद्धिप्रिय जो।।7।।

ॐ ह्रीं जिनयज्ञप्रतिज्ञापनाय मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

1. नीलमणि

श्री नेमिनाथ पूजा

–अथ स्थापना –

(तर्ज –करो कल्याण आतम का.....)

नमन श्री नेमि जिनवर को, जिन्होंने स्वात्मनिधि पायी।
तजी राजीमती कांता, तपो लक्ष्मी हृदय भायी।।
करूँ आह्वान हे भगवन्! पधारो मुझ मनोम्बुज में।
करूँ मैं अर्चना रुचि से, अहो उत्तम घड़ी आई।।1।। नमन श्री...।।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथ अष्टक –

(तर्ज –ऐ माँ तेरी सूरत से अलग भगवान् की सूरत क्या होगी.....)

हे नेमिनाथ! तुम भक्ती से, निज शक्ति बढ़ाने आये हैं।
भगवान् -2 तुम्हारे चरणों की, हम पूजा करने आये हैं।।
भव भव में नीर पिया, नहिं प्यास बुझा पाये।
तुम पद धारा देने, पद्माकर जल लाये।।
निज का अघमल धोने के लिए, जलधारा करने आये हैं।।
भगवान्.।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नेमिनाथ! तुम भक्ती से, निज शक्ति बढ़ाने आये हैं।
भगवान् -2 तुम्हारे चरणों की, हम पूजा करने आये हैं।।
चंदन चंदा किरणें, नहिं शीतल कर सकते।
तुम पद अर्चा करने, केशर चंदन घिसके।।
तनु ताप शांत हेतू चंदन, चरणों में चढ़ाने आये हैं।।
भगवान्.।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नेमिनाथ तुम भक्ती से, निज शक्ति बढ़ाने आये हैं।
भगवान् -2 तुम्हारे चरणों की, हम पूजा करने आये हैं।।
निज सुख के खंड हुए, नहिं अक्षय पद पाये।
सित अक्षत ले करके, तुम पास प्रभो! आये।।
अविनश्वर सुख पाने के लिए, सित पुंज चढ़ाने आये हैं।।
भगवान्.।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नेमिनाथ! तुम भक्ती से, निज शक्ति बढ़ाने आए हैं।
भगवान् -2 तुम्हारे चरणों की, हम पूजा करने आये हैं।।
हे नाथ! कामरिपु ने, त्रिभुवन को वश्य किया।
इससे बचने हेतू, बहु सुरभित पुष्प लिया।।
निज आत्म गुणों की सुरभि हेतु, ये पुष्प चढ़ाने आये हैं।।
भगवान्.।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नेमिनाथ! तुम भक्ती से, निज शक्ति बढ़ाने आए हैं।
भगवान् -2 तुम्हारे चरणों की, हम पूजा करने आये हैं।।
बहुविध पकवान चखे, नहिं भूख मिटा पाये।
इस हेतू चरु लेकर, तुम निकट प्रभो! आये।।
निज आत्मा की तृप्ती के लिए, नैवेद्य चढ़ाने आये हैं।।
भगवान्.।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नेमिनाथ! तुम भक्ती से, निज शक्ति बढ़ाने आए हैं।
भगवान् -2 तुम्हारे चरणों की, हम पूजा करने आये हैं।।
निज मन में अंधेरा है, अज्ञान तिमिर छाया।
इस हेतू दीपक ले, प्रभु पास अभी आया।।
निज ज्ञान ज्योति पाने के लिए, हम आरति करने आये हैं।।
भगवान्.।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नेमिनाथ! तुम भक्ती से, निज शक्ति बढ़ाने आए हैं।
भगवान् -2 तुम्हारे चरणों की, हम पूजा करने आये हैं।।

कर्मों ने दुःख दिया, तुम कर्मरहित स्वामी।
अतएव धूप लेके, हम आये जगनामी।।
सब अशुभकर्म के भस्महेतु, हम धूप जलाने आये हैं।।
भगवान्.।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नेमिनाथ! तुम भक्ती से, निज शक्ति बढ़ाने आए हैं।
भगवान् -2 तुम्हारे चरणों की, हम पूजा करने आये हैं।।
बहुविध के फल खाये, नहिं रसना तृप्त हुई।
ताजे फल ले करके, प्रभु पूजूँ बुद्धि हुई।।
इच्छाओं की पूर्ती के लिए, फल अर्पण करने आये हैं।।
भगवान्.।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नेमिनाथ! तुम भक्ती से, निज शक्ति बढ़ाने आए हैं।
भगवान् -2 तुम्हारे चरणों की, हम पूजा करने आये हैं।।
प्रभु तुम गुण की अर्चा, भवतारन हारी है।
भवदधि में डूबे को, अवलंबनकारी है।।
निज रत्नत्रय प्राप्ती के लिए, हम अर्घ्य चढ़ाने आये हैं।।
भगवान्.।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शेर छंद – **यमुना नदी का नीर स्वर्णभृंग में भरूँ।**
श्रीनेमिनाथ के चरण में धार मैं करूँ।।
चउसंघ में सब लोक में भि शांति कीजिए।
बस ये ही एक याचना प्रभु पूर्ण कीजिए।।10।।

शांतये शांतिधारा।

हे नेमि! नीलकमल आप चिन्ह शोभता।
ये सुरभि पुष्प भी तो घ्राण नयन मोहता।।
प्रभु पाद कमल में अभी पुष्पांजलि करूँ।
सब रोग शोक दूर हों निज संपदा भरूँ।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।।

अथ पंचकल्याणक अर्घ्य

आवो हम सब करें अर्चना, प्रभु के पंचकल्याण की।
इन्द्र सभी मिल भक्ती करते, तीर्थंकर भगवान की।।
वन्दे जिनवरम्-4।।
श्रीसमुद्रविजय शौरीपुरि, नृप पितु मात शिवादेवी।
गर्भ बसे शुभ स्वप्न दिखाकर, तिथि कार्तिक शुक्ला षष्ठी।।
गर्भकल्याणक पूजा करते, मिले राह कल्याण की।।
इन्द्र सभी मिल भक्ती करते, तीर्थंकर भगवान की।।1।।

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्लाषष्ठ्यां श्रीनेमिनाथजिनगर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आवो हम सब करें अर्चना, प्रभु के पंचकल्याण की।
इन्द्र सभी मिल भक्ती करते, तीर्थंकर भगवान की।।
वन्दे जिनवरम्-4।।
श्रावण शुक्ला छठ में मति श्रुत, अवधिज्ञान प्रभु जन्मे थे।
मेरू पर जन्माभिषेक में, देव देवियाँ हर्षे थे।।
जन्मकल्याणक पूजा करते, मिले राह उत्थान की।।
इन्द्र सभी मिल भक्ती करते, तीर्थंकर भगवान की।।2।।

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लाषष्ठ्यां श्रीनेमिनाथजिनजन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आवो हम सब करें अर्चना, प्रभु के पंचकल्याण की।
इन्द्र सभी मिल भक्ती करते, तीर्थंकर भगवान की।।
वन्दे जिनवरम्-4।।
चले ब्याहने राजुल को, पशु बंधे देख वैराग्य हुआ।
श्रावण सुदि छठ सहस्राम्र वन, में प्रभु दीक्षा स्वयं लिया।
दीक्षा तिथि जजते मिल जावे, बुद्धि आत्मकल्याण की।।
इन्द्र सभी मिल भक्ती करते, तीर्थंकर भगवान की।।3।।

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लाषष्ठ्यां श्रीनेमिनाथजिनदीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आवो हम सब करें अर्चना, प्रभु के पंचकल्याण की।
इन्द्र सभी मिल भक्ती करते, तीर्थंकर भगवान की।।
वन्दे जिनवरम्-4।।

आश्विन सुदि एकम पूर्वाण्हे, ऊर्जयंत गिरि पर तिष्ठे।
केवलज्ञान सूर्य प्रगटा तब, प्रभु को वांसवृक्ष नीचे।।
समवसरण में किया सभी ने, पूजा केवलज्ञान की।।
इन्द्र सभी मिल भक्ती करते, तीर्थंकर भगवान की।।4।।

ॐ ह्रीं आश्विनशुक्लाप्रतिपदायां श्रीनेमिनाथजिनकेवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आवो हम सब करें अर्चना, प्रभु के पंचकल्याण की।
इन्द्र सभी मिल भक्ती करते, तीर्थंकर भगवान की।।
वन्दे जिनवरम्-4।।
प्रभु गिरनार शैल से मुक्ती, रमा वरी शिवधाम गये।
सुदि आषाढ़ सप्तमी सुरगण, वंद्य नेमि जगपूज्य हुए।।
जो निर्वाण कल्याणक पूजें, मिले राह निर्वाण की।।
इन्द्र सभी मिल भक्ती करते, तीर्थंकर भगवान की।।5।।

ॐ ह्रीं आषाढ़शुक्लासप्तम्यां श्रीनेमिनाथजिनमोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

(108 अर्घ्य)

दोहा– **गुण अनंत के तुम धनी, कतिपय गुण से नाथ।**
पुष्पांजलि से पूजहूँ, नमूँ नमाकर माथ।।1।।

अथ मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

ॐ ह्रीं इन्द्र-धरणेन्द्र-नरेन्द्रादिकृतानन्यसंभाविनी पूजायोग्याय यज्ञार्हगुणसमन्विताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

ॐ ह्रीं भग-ज्ञानपरिपूर्णैश्वर्य-तपःश्रीवैराग्यमोक्षप्राप्ताय भगवद्गुण-समन्विताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।2।।

ॐ ह्रीं चतुर्ज्ञानधारिगणधरादिकृतानन्यसाधारणीवंदनाप्राप्ताय अर्हद्गुण-समन्विताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।3।।

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यप्रतिष्ठितजनमहतीप्रशंसाप्राप्ताय महार्हगुणसमन्विताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।4।।

ॐ ह्रीं इन्द्रादिपूजितपदप्राप्ताय मघवार्चितनामसमन्विताय श्रीनेमिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।5।।

ॐ ह्रीं सत्यार्थयज्ञयोग्यपदप्रदानसमर्थाय भूतार्थयज्ञपुरुषगुणसमन्विताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।6।।

ॐ ह्रीं सत्यार्थयज्ञयोग्यपदधारकाय भूतार्थक्रतुपुरुषगुणसमन्विताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।7।।

ॐ ह्रीं जगत्पूज्यपदप्राप्ताय पूज्यगुणसमन्विताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।8।।

ॐ ह्रीं स्याद्वादपरीक्षार्थपण्डितजनप्रेरणाप्रदायकाय भट्टारकगुणसमन्विताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।9।।

ॐ ह्रीं पूज्यानामपि पूज्यपदधारकाय तत्रभवान्ननामसार्थकगुणयुक्ताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।10।।

ॐ ह्रीं त्रिभुवनपूज्यपदप्राप्ताय अत्रभवान्गुणसमन्विताय श्रीनेमिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।11।।

ॐ ह्रीं त्रिभुवनमस्तकस्थितसर्वजनश्रेष्ठपदप्राप्ताय महान्नामसार्थक गुणसमन्विताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।12।।

ॐ ह्रीं महतीपूजायोग्याय महामहार्हगुणसमन्विताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।13।।

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यशाश्वतायुर्धारकाय तत्रायुर्गुणसमन्विताय श्रीनेमिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।14।।

ॐ ह्रीं अनन्तानन्तकालावधिस्थितपुनरागमनविरहिताय दीर्घायुगुण-समन्विताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।15।।

ॐ ह्रीं त्रिभुवनजनपूज्यदिव्यध्वनिरूपवचनप्राप्ताय अर्घ्यवाक्गुण-समन्विताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।16।।

ॐ ह्रीं सर्वजनाराधनायोग्यपदप्राप्ताय आराध्यगुणसमन्विताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।17।।

ॐ ह्रीं त्रिभुवनजनसाधारणपूजायोग्याय परमाराध्यगुणसमन्विताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।18।।

ॐ ह्रीं गर्भावतार-जन्माभिषेक-निष्क्रमण-ज्ञान-निर्वाणनाम-पंचकल्याणक पूजाप्राप्ताय पंचकल्याणपूजितगुणसमन्विताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।19।।

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनविशुद्धियुक्तद्वादशगणप्रमुखाय दृग्विशुद्धिगणोदग्रगुण समन्विताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।20।।

ॐ ह्रीं रत्नसुवर्णादिधनवृष्टिभिर्मातृभवनांगणपूजिताय वसुधारार्चितास्पदमुण समन्विताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।21।।

ॐ ह्रीं गर्भावतारपूर्वजननीषोडशस्वप्नप्रदर्शकाय सुस्वप्नदर्शिगुण-समन्विताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।22।।

ॐ ह्रीं मनुष्येषु असाधारणतेजबलधारकाय दिव्यौजस्गुणसमन्विताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।23।।

ॐ ह्रीं स्वजननीपादकमलशचीपूजितकराय शचीसेवितमातृकगुणसमन्विताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।24।।

ॐ ह्रीं गर्भावतारसमये पञ्चदशमासरत्नवृष्टिसहितपदप्राप्ताय रत्नगर्भगुणसमन्विताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।25।।

ॐ ह्रीं श्री-ह्री-धृतिकीर्तिबुद्धिलक्ष्मीशान्तिपुष्टिदेवीभिःपवित्रितगर्भवासाय श्रीपूतगर्भगुणसमन्विताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।26।।

ॐ ह्रीं सुरेन्द्रादिकृतगर्भकल्याणोत्सवसमुन्नताय गर्भोत्सवोच्छ्रितगुण-समन्विताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।27।।

ॐ ह्रीं दिव्यदेवोपनीतपूजया पुष्टिप्राप्ताय दिव्योपचारोपचितगुणसमन्विताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।28।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरपुण्यप्रभावेन मातृगर्भाशयकमलकर्णिकासिंहासनोपरि गर्भावासकरणाय पद्मभूसार्थकगुणसमन्विताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं....।।29।।

ॐ ह्रीं कालकलाव्यतीताय निष्कलगुणसमन्विताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।30।।

ॐ ह्रीं स्वात्मनोत्पद्यमानजन्मधारकाय स्वजगुणसमन्विताय श्रीनेमिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।31।।

ॐ ह्रीं सर्वजनहितकरजन्मधारकाय सर्वीयजन्मगुणसमन्विताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।32।।

ॐ ह्रीं पुण्योपार्जनहेतुभूतशरीरधारकाय पुण्यांगगुणसमन्विताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।33।।

ॐ ह्रीं कोटिचन्द्रसूर्याधिकतेजोधारकाय भास्वद्गुणसमन्विताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।34।।

ॐ ह्रीं सर्वोत्कृष्टपुण्यधारकाय उद्भूतदैवतगुणसमन्विताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।35।।

ॐ ह्रीं त्रिभुवनजनज्ञापितजन्मधारकाय विश्वविज्ञातसंभूतिगुणसमन्विताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।36।।

ॐ ह्रीं भवनवासि-वानव्यंतर-ज्योतिष्क-कल्पवासिदेवागमनेन विश्वस्मिन्नाश्चर्यकराय विश्वदेवागमाद्भुतगुणसमन्विताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।37।।

ॐ ह्रीं शचीकृतमायामयबालकस्वरूपदर्शकाय शचीसृष्टप्रतिच्छन्द-गुणसमन्विताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।38।।

ॐ ह्रीं इन्द्रलोचनानंदकारकाय सहस्राक्षदृगुत्सवगुणसमन्विताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।39।।

ॐ ह्रीं जन्माभिषेकार्थगमनकाले नृत्यदैरावतहस्तिनउपरि उपविष्टाय नृत्यदैरावतासीननामधारकाय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।40।।

ॐ ह्रीं शतेन्द्रवंद्यपदप्राप्ताय सर्वशक्रनमस्कृतगुणसमन्विताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।41।।

ॐ ह्रीं आनन्दोत्सुक-परधर्मानुरागसहितामरविद्याधरगणवंदिताय हर्षाकुलामरखगनामप्राप्ताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।42।।

ॐ ह्रीं चारणर्द्धिसमन्वितमुनिगणाभीष्टजन्माभिषेक-कल्याणप्राप्ताय चारणर्षिमतोत्सवनामधारकाय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।43।।

ॐ ह्रीं प्राणिवर्गस्य विशेषरक्षाकारिणे व्योमनामसमन्विताय श्रीनेमिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।44।।

ॐ ह्रीं विष्णुपद-प्राणिवर्गपद-चतुर्दशमार्गणास्थानरक्षकपरमकारूणिकपद-प्राप्ताय विष्णुपदारक्षनामसमन्विताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।45।।

ॐ ह्रीं जन्माभिषेकचतुष्किका-मेरुपर्वतप्राप्ताय स्नानपीठायिताद्रिराट्नाम समन्विताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।46।।

ॐ ह्रीं तीर्थस्वरूपजलाशयस्वामिरूपंमन्यमानक्षीरसमुद्रपवित्रीकृताय तीर्थेशंमन्यदुग्धाधिनामसमन्विताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।47।।

ॐ ह्रीं स्नानजलेन वासवशरीरप्रक्षालिताय स्नानाम्बुस्नातवासवनाम-समन्विताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।48।।

ॐ ह्रीं जन्माभिषेकजलेन त्रिभुवनपवित्रीकृताय गन्धाम्बुपूतत्रैलोक्यगुण-समन्विताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।49।।

ॐ ह्रीं स्वाभाव्येन छिद्रसहितप्रभुकर्णइन्द्रवज्रसूचीकर्णवेधविधिप्राप्ताय वज्रसूचीशुचिश्रवस्नाम समन्विताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।50।।

ॐ ह्रीं सफलीकृत-इन्द्रमहादेवीहस्ताय कृतार्थितशचीहस्तनामसमन्विताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।51।।

ॐ ह्रीं इन्द्रेण सर्वमानितनामघोषणाप्राप्ताय शक्रोद्घुष्टेष्टनामकगुण-समन्विताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।52।।

ॐ ह्रीं मेरुपर्वतस्योपरिजन्माभिषेकानन्तरं इन्द्रकृतानंदनर्तनप्राप्ताय शक्रारब्धानन्दनृत्यगुणसमन्विताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।53।।

ॐ ह्रीं शच्या प्रभुवैभवं प्रदर्श्य जिनजननी-आश्चर्योत्पादकाय शचीविस्मापिताम्बिकगुणसमन्विताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।54।।

ॐ ह्रीं ऋन्माभिषेकानन्तरमिन्द्रकृतपितृसमक्षनर्तनाय इन्द्रनृत्यन्तपितृकगुण-समन्विताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।55।।

ॐ ह्रीं सौधर्मेन्द्रादेशप्राप्तकुबेरेण जगज्जनमनोरथपूर्णीकृताय रैदपूर्णमनोरथगुणसमन्विताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।56।।

ॐ ह्रीं आदेशग्राहकसौधर्मेन्द्रकृतसेवाभक्तियुक्ताय आज्ञार्थीन्द्रकृतासेवगुण-समन्विताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।57।।

ॐ ह्रीं लौकान्तिकदेवाभीष्टप्रभुमोक्षोद्यमसहिताय देवर्षीष्टशिवोद्यमगुण-समन्विताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।58।।

ॐ ह्रीं जैनेश्वरीदीक्षासमयसमस्तजगत्क्षोभिताय दीक्षाक्षणक्षुब्ध-जगन्नाम्नालंकृताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।59।।

ॐ ह्रीं अधोमध्योर्ध्वलोकस्वामिपूजिताय भूर्भुवःस्वःपतीडितगुणसमन्विताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।60।।

ॐ ह्रीं कुबेरकृतसमवसरणमहिमामण्डिताय कुबेरनिर्मितास्थानगुणधारकाय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।61।।

ॐ ह्रीं नवनिधिलक्षणबहिरंगाभ्युदयलक्ष्मी-अनन्तचतुष्टय-रूपान्तरंग-लक्ष्मीप्रदानसमर्थाय श्रीयुक्-गुणसमन्विताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।62।।

ॐ ह्रीं यम-नियम-प्राणायाम-प्रत्याहार-धारणा-ध्यान-समाधि-लक्षणाष्ट-योगसहितयोगिजनानामीश्वरगणधरदेवादिभिरर्चिताय योगीश्वरार्चितगुण-समन्विताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।63।।

ॐ ह्रीं ब्रह्मापरनामाहमिन्द्रैःस्तुत्याय ब्रह्मोद्यगुणसमन्विताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।64।।

ॐ ह्रीं आत्मस्वरूपज्ञायकाय ब्रह्मविद्गुणसमन्विताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।65।।

ॐ ह्रीं योगिवृंदज्ञानगम्याय वेद्यगुणसमन्विताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।66।।

ॐ ह्रीं पूजायोग्यपदप्राप्ताय याज्यगुणसमन्विताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।67।।

ॐ ह्रीं यज्ञ-महामहस्वामिने यज्ञपतिगुणसमन्विताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।68।।

ॐ ह्रीं योगिध्यानप्रकटीभूताय क्रतुनामसमन्विताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।69।।

ॐ ह्रीं पूजाविध्युपायप्रदर्शिताय यज्ञांगगुणसमन्विताय श्रीनेमिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।70।।

ॐ ह्रीं मृत्युविजयिपदप्राप्ताय अमृतगुणसमन्विताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।71।।

ॐ ह्रीं पूजायोग्यपदप्राप्ताय यज्ञगुणसमन्विताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।72।।

ॐ ह्रीं निजात्मस्वरूपे कर्मेन्धनहवनकरणसमर्थाय हविनामसमन्विताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।73।।

ॐ ह्रीं इन्द्र-नागेन्द्र-चक्रवर्ति-गणधरादिभिःस्तुतियोग्याय स्तुत्यगुणसमन्विताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।74।।

ॐ ह्रीं सर्वजगत्प्राणिभिःस्तुतिप्राप्ताय स्तुतीश्वरगुणसमन्विताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।75।।

ॐ ह्रीं आत्मस्वभावोपलब्धिरूपाय समवसरणविभूतिमंडिताय भावनामसमन्विताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।76।।

ॐ ह्रीं महामहस्वरूपमहतीकल्पद्रुमादिपूजाप्राप्ताय महामहपतिगुण-समन्विताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।77।।

ॐ ह्रीं घातिकर्मेन्धनहोमलक्षणलक्षिताय महायज्ञगुणसमन्विताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।78।।

ॐ ह्रीं याजकेषु प्रमुखपदप्राप्ताय अग्रयाजकगुणसमन्विताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।79।।

ॐ ह्रीं करूणास्वरूपपूजाप्राप्ताय दयायागगुणसमन्विताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।80।।

ॐ ह्रीं त्रिभुवनजनपूज्यपदप्राप्ताय जगत्पूज्यगुणसमन्विताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।81।।

ॐ ह्रीं अष्टविधार्चनयोग्याय पूजार्हगुणसमन्विताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।82।।

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यस्थितभव्यप्राणिगणपूजिताय जगदर्चितगुणसमन्विताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।83।।

ॐ ह्रीं इन्द्रादिषु श्रेष्ठपदप्राप्ताय देवाधिदेवगुणसमन्विताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।84।।

ॐ ह्रीं द्वात्रिंशदिन्द्रपूजिताय शक्रार्च्यगुणसमन्विताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।85।।

ॐ ह्रीं देवानां देव-परमदेवपदप्राप्ताय देवदेवगुणसमन्विताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।86।।

ॐ ह्रीं जगत्स्थितप्राणिवर्गपितृतुल्योपदेशकाय जगद्गुरुगुणसमन्विताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।87।।

ॐ ह्रीं इन्द्रादेशामंत्रितचतुर्विधदेववृंदपूजिताय संहूतदेवसंघार्च्यगुण-समन्विताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।88।।

ॐ ह्रीं देवरचितकमलोपरिचरणकमलनिक्षेपणकराय पद्मयानगुण-समन्विताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।89।।

ॐ ह्रीं मोहारिविजयिध्वजधारकाय जयध्वजिगुणसमन्विताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।90।।

ॐ ह्रीं कोट्यर्कसमानतेजोमंडलसहिताय भामंडलीगुणसमन्विताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।91।।

ॐ ह्रीं द्वात्रिंशद्यक्षसंवीज्यमानचतुःषष्टिचामरसहिताय चतुःषष्टिचामर-गुणसमन्विताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।92।।

ॐ ह्रीं सार्धद्वादशकोटिवाद्योद्घोषमहिमाप्राप्ताय देवदुंदुभिनामसमन्विताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।93।।

ॐ ह्रीं तालु-ओष्ठादिस्पर्शविरहितदिव्यध्वनिप्राप्ताय वागस्पृष्टासनगुण-समन्विताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।94।।

ॐ ह्रीं छत्रत्रयविभूतिधारकाय छत्रत्रयराट्गुणसमन्विताय श्रीनेमिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।95।।

ॐ ह्रीं उपरिमुखधोवृंतकृतद्वादशयोजनपर्यंतकुसुमवृष्टिमहिमाप्राप्ताय पुष्पवृष्टिभाक्नामसमन्विताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।96।।

ॐ ह्रीं दिव्यामानुषमहामंडपोपरिस्थितयोजनैक-प्रमाणविस्तृतमणिमया-

शोकवृक्षमहिमाधारकाय 'दिव्याशोक' नामसमन्विताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।97।।

ॐ ह्रीं दूरादपि दर्शनमात्रेण मिथ्यावादि-अहंकारशतखण्डीकरण-समर्थचतुर्मानस्तंभप्राप्ताय मानमर्दिनामसमन्विताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।98।।

ॐ ह्रीं गीत-नृत्य-वादित्र सहितनाट्यशालागतदेवांगनानर्तनविभवधारकाय संगीतार्हनामसमन्विताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं....।।99।।

ॐ ह्रीं प्रतिप्रतोलि-शृंगारतालकलशध्वजस्वस्तिकछत्रदर्पणचामर नामाष्टमंगलद्रव्यविभवधारकाय अष्टमंगलनामसमन्विताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।100।।

ॐ ह्रीं संसारसागरपारकरणसमर्थद्वादशांगशास्त्रमयतीर्थकरणकुशलाय तीर्थकृद्गुणसमन्विताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं....।।101।।

ॐ ह्रीं स्वपादस्पर्शमात्राद्भूमिपर्वतादिस्थलतीर्थकरणसमर्थाय तीर्थसृट्नामसमन्विताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।102।।

ॐ ह्रीं संसारवार्द्धितारणसमर्थरत्नत्रयस्वरूपभावतीर्थसृजनकरणाय तीर्थकरगुणसमन्विताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।103।।

ॐ ह्रीं पंचकल्याणविभवकारितीर्थकरनामकर्मप्रकृतिबंधप्राप्ताय तीर्थंकरगुणसमन्विताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।104।।

ॐ ह्रीं क्षायिकसम्यक्त्वप्राप्ताय सुदृक्गुणसमन्विताय श्रीनेमिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।105।।

ॐ ह्रीं धर्मचक्रप्रवर्तनसमर्थाय तीर्थकर्तृनामसमन्विताय श्रीनेमिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।106।।

ॐ ह्रीं धर्मतीर्थपोषणकराय तीर्थभर्तृगुणसमन्विताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।107।।

ॐ ह्रीं तीर्थस्वामिपदप्राप्ताय तीर्थेशगुणसमन्विताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।108।।

पूर्णार्घ्य

तर्ज-यह नंदन वन.....

यह मानवतन, अनमोल रतन, पा विषयों में मत फंस जाना।
भवसिंधु अगर तरना चाहो, जिनचरण शरण में आ जाना।।
तीर्थंकर आत्म साधना कर, समता पियूष का पान करें।
निजशुक्ल ध्यान के द्वारा ही, सब कर्मनाश शिवनारि वरें।।
इन भगवन्तों की पूजा कर, परमानंदामृत पा जाना।।

यह मानव तन.....।।1।।

नाना विध व्याधी से पीड़ित, या दरिद्रता से दुखी हुये।
नेमीप्रभु की पूजा करके, जन-जन सब दुख से मुक्त हुये।।
फिर भी ये परम वीतरागी, इनसे मन पावन कर जाना।।

यह मानव तन.....।।2।।

ॐ ह्रीं यज्ञार्हगुणादितीर्थेशगुणपर्यंत अष्टोत्तरशतगुणसमन्विताय श्रीनेमिनाथजिनेंद्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य – **ॐ ह्रीं सर्वाण्हयक्षकूष्माण्डीयक्षीसहिताय श्रीअरिष्टनेमिनाथाय नमः।**

(सुगंधित पुष्प, लवंग या पीले तंदुल से 108 बार जपें।)

जयमाला

(तर्ज –चंदन सा बदन.....)

नेमी भगवन्! शत शत वंदन, शत शत वंदन तव चरणों में।
कर जोड़ खड़े, तव चरण पड़े हम शीश झुकाते चरणों में।।टेक.।।
यौवन में राजमती को वरने चले बरात सजा करके।
पशुओं को बांधे देख प्रभो! रथ मोड़ लिया उल्टे चल के।।
लौकांतिक सुर संस्तव करके, पुष्पांजलि की तव चरणों में।।1।।

प्रभु नग्न दिगंबर मुनि बने, ध्यानामृत पी आनंद लिया।
कैवल्य सूर्य उगते धनपति ने समवसरण भी अधर किया ।।
तब राजमती आर्यिका बनी, चतुसंघ नमें तव चरणों में।।नेमी.।।2।।

वरदत्त आदि ग्यारह गणधर, अठरह हजार मुनिराज वहाँ।
राजीमति गणिनी आदिक, चालिस हजार संयतिकाएँ वहाँ।।
इक लाख सुश्रावक तीन लाख, श्राविका झुकीं तव चरणों में।।नेमी.।।3।।

सर्वाण्ह यक्ष अरु कूष्मांडिनि, यक्षी प्रभु शंख चिन्ह माना।
आयू इक सहस वर्ष चालिस, कर सहस देह उत्तम जाना।।
द्वादशगण से सब भव्य वहाँ, शत-शत वंदे तव चरणों में।।नेमी.।।4।।

प्रभु समवसरण में कमलासन पर, चतुरंगुल से अधर रहें।
चउ दिश में प्रभु का मुख दीखे, अतएव चतुर्मुख ब्रह्म कहें।।
सौ इन्द्र मिले पूजा करते, नित नमन करें तव चरणों में।।नेमी.।।5।।

प्रभु के विहार में चरण कमल, तल स्वर्ण कमल खिलते जाते।
बहुकोशों तक दुर्भिक्ष टले, षट् ऋतुज फूल फल खिल जाते।।
तनु नीलवर्ण सुंदर प्रभु को, सब वंदन करते चरणों में।।नेमी.।।6।।

तरुवर अशोक था शोकरहित, सिंहासन रत्न खचित सुंदर।
छत्रत्रय मुक्ताफल लंबित, भामंडल भवदर्शी मनहर।।
निज सात भवों को देख भव्य, प्रणमन करते तव चरणों में।। नेमी.।।7।।

सुरदुंदुभि बाजे बाज रहे, ढुरते हैं चौंसठ श्वेत चंवर।
सुरपुष्पवृष्टि नभ से बरसे, दिव्यध्वनि फैले योजन भर।।
श्रीकृष्ण तथा बलदेव आदि, अतिभक्ति लीन तव चरणों में।।नेमी.।।8।।

हे नेमिनाथ! तुम बाह्य और अभ्यंतर लक्ष्मी के पति हो।
दो मुझे अनंत चतुष्टयश्री, जो ज्ञानमती सिद्धिप्रिय हो।।
इसलिए अनंतों बार नमें, हम शीश झुकाते चरणों में।।नेमी.।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

शेर छंद – **जो भव्य नेमिनाथ का विधान ये करें।**
वे आधि व्याधि संकटादि कष्ट परिहरें।।
अतिशायि पुण्यबंध से ईप्सित सफल करें।
''सज्ज्ञानमती'' से अनन्त संपदा वरें।।1।।

।।इत्याशीर्वादः। पुष्पांजलिः।।

प्रशस्ति

श्री शांति कुंथु अरनाथ प्रभू ने, जन्म लिया इस धरती पर।
यह हस्तिनागपुरि इंद्रवंद्य, रत्नों की वृष्टि हुई यहाँ पर।।
यहाँ जंबूद्वीप बना सुंदर, जिनमंदिर हैं अनेक सुखप्रद।
मेरा यहाँ वर्षायोग काल, स्वाध्याय ध्यान से है सार्थक।।1।।

श्री नेमिनाथ का लघु विधान, मंत्रों की रचना भक्तीवश।
यह रोग शोक दारिद्र्य, दुःख संकट हरने वाला संतत।।
वीराब्द पचीस सौ इकतिस श्रावण, मास शुक्ल षष्ठी तिथि में।
यह विधान रचना की मैंने, होवे मंगलकर सब जग में।।2।।

इस युग के चारित्र चक्री श्री, आचार्य शांतिसागर गुरुवर।
बीसवीं सदी के प्रथमसूरि, इन पट्टाचार्य वीरसागर।।
ये दीक्षा गुरुवर मेरे हैं, मुझ नाम रखा था 'ज्ञानमती'।
इनके प्रसाद से ग्रंथों की, रचना कर हुई अन्वर्थमती।।3।।

श्री नेमिनाथ निर्वाणभूमि, गिरनार क्षेत्र पर टोंक बनें।
पाँचवी टोंक पर नेमिनाथ के, चरण इंद्र कृत हैं माने।।
सुरपति ने प्रभु के चरण वहाँ, उत्कीर्ण किये थे भक्ती से।
यह कथन आज भी है प्रसिद्ध, ग्रंथों में लिखा आचार्यों ने ।।4।।

उन चरणों की पूजा-भक्ती, जिनधर्मी नितप्रति किया करें।
नेमीप्रभु शासन यक्ष-यक्षिणी, नित प्रति रक्षा किया करें।।
जब तक निर्वाणभूमि गिरनार, क्षेत्र जग में जिनतीर्थ रहे।
तब तक यह गणिनी ज्ञानमती, कृति श्री विधान जयशील रहे।।5।।

शौरीपुर तीर्थ पूजा

—प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

—स्थापना (शंभु छंद) —

तीर्थंकर प्रभु श्री नेमिनाथ का, शौरीपुर में जन्म हुआ।
माँ शिवादेवि अरु पिता समुद्रविजय का शासन धन्य हुआ।।
उस जन्मभूमि शौरीपुर की, पूजन हेतू आह्वानन है।
सन्निधीकरण विधि के द्वारा, मैं करूँ तीर्थ स्थापन है।।1।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीनेमिनाथजन्मभूमिशौरीपुरतीर्थक्षेत्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीनेमिनाथजन्मभूमिशौरीपुरतीर्थक्षेत्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीनेमिनाथजन्मभूमिशौरीपुरतीर्थक्षेत्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं स्थापनं।

—अष्टक —

तर्ज —तीरथ करने चली सती.....

पूजन करने चलो सभी, शौरीपुर में नेमीश्वर की।
जन्मभूमि से सार्थ जहाँ, जन्में बाइसवें जिनवर जी।।टेक.।।
नीर पिया भव भव में मैंने, प्यास न लेकिन बुझ पाई।
प्रभु पद में जलधारा देने, हेतु तभी स्मृति आई।।
स्वर्ण कलश में जल लेकर, पूजा कर लूँ तीर्थेश्वर की।
जन्मभूमि के साथ वहाँ, जन्मे बाइसवें जिनवर की।।1।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीनेमिनाथजन्मभूमिशौरीपुरतीर्थक्षेत्राय जन्मजरा-मृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

पूजन करने चलो सभी, शौरीपुर में नेमीश्वर की।
जन्मभूमि से सार्थ जहाँ, जन्मे बाइसवें जिनवर जी।। टेक.।।
चन्दन एवं चन्द्रकिरण, तन को शीतल कर सकते हैं।
मन को शीतल करने में, नहिं वे सक्षम हो सकते हैं।।

सुरभित चंदन घिस कर अब, पूजन कर लूँ तीर्थेश्वर की।
जन्मभूमि के साथ वहाँ, जन्मे बाइसवें जिनवर जी।।2।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीनेमिनाथजन्मभूमिशौरीपुरतीर्थक्षेत्राय संसारताप-विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

पूजन करने चलो सभी, शौरीपुर में नेमीश्वर की।
जन्मभूमि से सार्थ जहाँ, जन्मे बाइसवें जिनवर जी।।टेक.।।
आतम सुख का स्वाद चखा नहिं, इसीलिए दुख पाया है।
खंडित सुख को समझ अखंडित, उसमें ही भरमाया है।।
अक्षयपद हित अक्षत ले, पूजन कर लूँ तीर्थेश्वर की।
जन्मभूमि के साथ वहाँ, जन्मे बाइसवें जिनवर जी।।3।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीनेमिनाथजन्मभूमिशौरीपुरतीर्थक्षेत्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

पूजन करने चलो सभी, शौरीपुर में नेमीश्वर की।
जन्मभूमि से सार्थ जहाँ, जन्मे बाइसवें जिनवर जी।।टेक.।।
हे प्रभु! कामदेव ने सारे, जग को अपने वश में किया।
इससे बचने हेतु सुगंधित, पुष्प चरण में अर्प दिया।।
निज सौरभ हित पुष्प को ले, पूजन कर लूँ तीर्थेश्वर की।
जन्मभूमि के साथ वहाँ, जन्मे बाइसवें जिनवर जी।।4।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीनेमिनाथजन्मभूमिशौरीपुरतीर्थक्षेत्राय कामबाण-विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पूजन करने चलो सभी, शौरीपुर में नेमीश्वर की।
जन्मभूमि से सार्थ जहाँ, जन्मे बाइसवें जिनवर जी।।टेक.।।
सभी तरह के पकवानों से, भूख मिटानी चाही है।
लेकिन कुछ पल भूख मिटी, नहिं शाश्वत तृप्ती पाई है।।
अब नैवेद्य थाल लेकर, पूजन कर लूँ तीर्थेश्वर की।
जन्मभूमि के साथ वहाँ, जन्मे बाइसवें जिनवर जी।।5।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीनेमिनाथजन्मभूमिशौरीपुरतीर्थक्षेत्राय क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूजन करने चलो सभी, शौरीपुर में नेमीश्वर की।
जन्मभूमि से सार्थ जहाँ, जन्मे बाइसवें जिनवर जी।।टेक.।।
अज्ञान तिमिर के कारण आतम, में अंधियारा छाया है।
इसीलिए प्रभु सम्मुख आकर, घृत का दीप जलाया है।।
आरति थाल सजाकर मैं, पूजन कर लूँ तीर्थेश्वर की।
जन्मभूमि के साथ वहाँ, जन्मे बाइसवें जिनवर जी।।6।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीनेमिनाथजन्मभूमिशौरीपुरतीर्थक्षेत्राय मोहांधकार-विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

पूजन करने चलो सभी, शौरीपुर में नेमीश्वर की।
जन्मभूमि से सार्थ जहाँ, जन्मे बाइसवें जिनवर जी।।टेक.।।
कर्म मुझे दुख देते हैं, तुम तो प्रभु कर्मरहित स्वामी।
अशुभ कर्म हों भस्म मेरे, इसलिए शरण आया स्वामी।।
अग्निपात्र में धूप जला, पूजन कर लूँ तीर्थेश्वर की।
जन्मभूमि के साथ वहाँ, जन्मे बाइसवें जिनवर जी।।7।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीनेमिनाथजन्मभूमिशौरीपुरतीर्थक्षेत्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

पूजन करने चलो सभी, शौरीपुर में नेमीश्वर की।
जन्मभूमि से सार्थ जहाँ, जन्मे बाइसवें जिनवर जी।।टेक.।।
बहुत तरह के फल खाकर, रसना तृप्त न हो पाई।
इसीलिए ताजे फल लेकर, प्रभु अर्चन की मति आई।।
शिवफल हित कुछ फल लेकर, पूजन कर लूँ तीर्थेश्वर की।
जन्मभूमि के साथ वहाँ, जन्मे बाइसवें जिनवर जी।।8।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीनेमिनाथजन्मभूमिशौरीपुरतीर्थक्षेत्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पूजन करने चलो सभी, शौरीपुर में नेमीश्वर की।
जन्मभूमि से सार्थ जहाँ, जन्मे बाइसवें जिनवर जी।।टेक.।।
जल गंधाक्षत आदि अष्ट, द्रव्यों का थाल सजाया है।
निज अनर्घ्य पद प्राप्त करूँ, यह भाव हृदय में आया है।।

रत्नत्रय हित अर्घ्य चढ़ा, पूजन कर लूं तीर्थेश्वर की।
जन्मभूमि के साथ वहाँ, जन्मे बाइसवें जिनवर जी।।9।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीनेमिनाथजन्मभूमिशौरीपुरतीर्थक्षेत्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–शेर छन्द –

गंगा नदी के नीर से कलशे को भर लिया।
प्रभु नेमि जन्मभूमि पे जलधार कर दिया।।
राजा प्रजा व राष्ट्र भर में शांति कीजिए।
मेरी भी आतमा में नाथ! शांति दीजिए।।10।।

शांतये शांतिधारा।

शौरीपुरी उद्यान में जो फूल खिले हैं।
वहाँ नेमिनाथ जन्म के उल्लेख मिले हैं।।
उन पुष्पों से प्रभु पाद में पुष्पांजली करूँ।
निज आत्मसंपदा को पा दुख शोक सब हरूँ।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

– प्रत्येक अर्घ्य (दोहा) –

कार्तिक सुदी छठ को जहाँ, हुई रतन की वृष्टि।
शौरीपुर की वह धरा, गर्भागम से पवित्र।।1।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीनेमिनाथगर्भकल्याणकपवित्रशौरीपुरतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रावण सुदि छठ नेमिप्रभु, जन्मे ले त्रय ज्ञान।
शौरीपुर वह जन्मभू, जजूँ मिले शिवथान।।2।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीनेमिनाथजन्मकल्याणकपवित्रशौरीपुरतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रावण सुदि छठ को हुआ, नेमिनाथ वैराग।
ब्याह न कर वन चल दिये, कर राजुल का त्याग।।3।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीनेमिनाथदीक्षाकल्याणकपवित्रगिरनारगिरि-सिद्धक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऊर्जयन्त गिरि पर हुआ, प्रभु को केवलज्ञान।
आश्विन सुदि एकम तिथी, जजूं नेमि भगवान।।4।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीनेमिनाथकेवलज्ञानकल्याणकपवित्रगिरनारगिरि-सिद्धक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऊर्जयन्त गिरि पर हुआ, प्रभु जी का निर्वाण।
सुदी आषाढ़ की सप्तमी, पूजूँ हो कल्याण।।5।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीनेमिनाथमोक्षकल्याणकपवित्रगिरनारगिरि-सिद्धक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य (दोहा) –

गर्भ जन्म कल्याण से, स्थल जो सु पवित्र।
पूजूँ मैं पूर्णार्घ्य ले, शौरीपुर को नित्य।।6।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीनेमिनाथगर्भजन्मकल्याणकपवित्रशौरीपुर-तीर्थक्षेत्राय पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र **–ॐ ह्रीं शौरीपुरजन्मभूमिपवित्रीकृत श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय नमः।**

जयमाला

तर्ज –हे वीर! तुम्हारे द्वारे पर.....

हे नेमिनाथ! तुम जन्मभूमि की, गुणगाथा गाएं कैसे।
शौरीपुर अतिशय पुण्यभूमि की, महिमा बतलाएं कैसे।।1।।

शब्दों की संख्या में कैसे, अगणित गुण बांधे जा सकते।
इन रूक्ष शब्द कण के द्वारा, भक्ति को दरशाएं कैसे।।2।।

जैसे दीपक से सूर्यदेव की, अर्चा लोक में होती है।
वैसे ही अल्पमती द्वारा, प्रभु गुणगाथा गाएं कैसे।।3।।

जैसे नदी का जल नदि में ही, अर्पण करते देखा मैंने।
वैसे ही अल्पशक्ति द्वारा, प्रभु जयमाला गाएं कैसे।।4।।

जैसे फूलों से वृक्षों की, पूजा करते हैं मूढ़मती।
वैसे ही तुच्छ भक्ति पुष्पों से, गुणमाला गाएं कैसे।।5।।

शौरीपुर राजा समुद्रविजय, श्री शिवादेवि संग रहते थे।
कर रहे देव जिनकी पूजा, उन महिमा बतलाएं कैसे।।6।।

इन सुत तीर्थंकर नेमी की, बारात चली जूनागढ़ को।
पशुबंधन लख वैराग्य हुआ, उस क्षण को बतलाएं कैसे।।7।।

राजुल ने भी नहिं ब्याह किया, पति का पथ अपनाया उसेन
दीक्षा लेकर आर्यिका बनी, उसका तप बतलाएं कैसे।।8।।

प्रभु नेमिनाथ ने ऊर्जयन्त, गिरि से मुक्ती पद प्राप्त किया।
निर्वाणथान वह पूज्य हुआ, उसकी महिमा गाएं कैसे।।9।।

इन बालयती तीर्थंकर का, जन्मस्थल शौरीपुर माना।
जहाँ अद्यावधि है जिनमंदिर, उसका यश बतलाएं कैसे।।10।।
इक मंदिर और बटेश्वर में, जहाँ यात्री नित्य ठहरते हैं।
अतिशयकारी प्रतिमाओं का, हम अतिशय बतलाएं कैसे।।11।।

उस जन्मभूमि शौरीपुर को, पूर्णार्घ्य समर्पण है मेरा।
''चन्दनामती'' है चाह यही, रत्नत्रय को पाएं कैसे।।12।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीनेमिनाथजन्मभूमिशौरीपुरतीर्थक्षेत्राय जयमाला पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

शान्तये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

गीता छन्द

जो भव्य प्राणी नेमिप्रभु की, जन्मभूमि को नमें।
तीर्थेश प्रभु की चरणरज से, शीश उन पावन बनें।।
कर पुण्य का अर्जन कभी तो, जन्म ऐसा पाएंगे।
वे ''चन्दनामति'' एक दिन, खुद तीर्थ सम बन जाएंगे।।

।। इत्याशीर्वादः, पुष्पांजलिः ।।

श्री गिरनार सिद्धक्षेत्र पूजा

—प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

—स्थापना (शंभु छंद) —

सिद्धक्षेत्र गिरनार गिरी, गुजरात प्रान्त का तीरथ है।
प्रभु नेमिनाथ के मोक्षगमन से, पावन उसकी कीरत है।।
तप, ज्ञान और निर्वाण तीन, कल्याणक स्थल को वंदूँ।
गिरनार तीर्थ की पूजन कर, मैं भी निज कर्मों को खंडूँ।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीनेमिनाथनिर्वाणभूमि गिरनारगिरिसिद्धक्षेत्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीनेमिनाथनिर्वाणभूमि गिरनारगिरिसिद्धक्षेत्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीनेमिनाथनिर्वाणभूमि गिरनारगिरिसिद्धक्षेत्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

—अष्टक (शंभु छन्द) —

सागर सरवर नदियों का जल, खारा औ मीठा होता है।
पर क्षीर सिंधु का जल केवल, मीठा व दुग्धसम होता है।।
भावों से उस जल के द्वारा, गिरनार क्षेत्र पूजन कर लूँ।
गिरिवर पर ध्यान करूँ मैं भी, ऐसी आतम शक्ती भर लूँ।।1।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीनेमिनाथनिर्वाणभूमि गिरनारगिरिसिद्धक्षेत्राय जन्मजरामृत्यु-विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

शीतल चन्दन को घिस घिसकर, उसकी शीतलता बढ़ती है।
कश्मीरी केशर परिणामों को, भी केशरिया करती है।।
उस चन्दन केशर के द्वारा, गिरनार क्षेत्र पूजन कर लूँ।
गिरिवर पर ध्यान करूँ मैं भी, ऐसी आतम शक्ती भर लूँ।।2।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीनेमिनाथनिर्वाणभूमि गिरनारगिरिसिद्धक्षेत्राय संसारताप-विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

मोती के दानों से शीतलता की, औषधि बन जाती है।
पूजन एवं जपमाला में, मोती भी चढ़ाई जाती है।।

मोती सम अक्षत के द्वारा, गिरनार क्षेत्र पूजन कर लूँ।
गिरिवर पर ध्यान करूँ मैं भी, ऐसी आतम शक्ती भर लूँ।।3।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीनेमिनाथनिर्वाणभूमि गिरनारगिरिसिद्धक्षेत्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

फूलों की माला प्रभु चरणों, से जब स्पर्शित हो जाती।
तब जयमाला बनकर मानव के, कंठ में वह शोभा पाती।।
सुरभित पुष्पों की माला से, गिरनार क्षेत्र पूजन कर लूँ।
गिरिवर पर ध्यान करूँ मैं भी, ऐसी आतम शक्ती भर लूँ।।4।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीनेमिनाथनिर्वाणभूमि गिरनारगिरिसिद्धक्षेत्राय कामबाण-विध्वसंनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

शारीरिक क्षुधा मिटाने के, साधन नाना विधि व्यंजन हैं।
आध्यात्मिक क्षुधा मिटाने में, तप ध्यान ज्ञान अवलम्बन हैं।।
सुन्दर पकवान थाल लेकर, गिरनार क्षेत्र पूजन कर लूँ।
गिरिवर पर ध्यान करूँ मैं भी, ऐसी आतम शक्ती भर लूँ।।5।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीनेमिनाथनिर्वाणभूमि गिरनारगिरिसिद्धक्षेत्राय क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विद्युत् के दीपक बाह्य अंधेरा, नष्ट करें आलोक भरें।
अन्तरतम का अज्ञान अंधेरा, प्रभु आरति से दूर करें।।
दीपक का थाल सजाकर मैं, गिरनार क्षेत्र पूजन कर लूँ।
गिरिवर पर ध्यान करूँ मैं भी, ऐसी आतम शक्ती भर लूँ।।6।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीनेमिनाथनिर्वाणभूमि गिरनारगिरिसिद्धक्षेत्राय मोहांधकार-विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभित चन्दन की धूप बना, अग्नी में दहन किया जाता।
वह धूप जलाकर निज आत्मा की, सुरभी को पाया जाता।।
उस मलयागिरि की धूप से मैं, गिरनार क्षेत्र पूजन कर लूँ।
गिरिवर पर ध्यान करूँ मैं भी, ऐसी आतम शक्ती भर लूँ।।7।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीनेमिनाथनिर्वाणभूमि गिरनारगिरिसिद्धक्षेत्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अंगूर आम अमरूद आदि फल, खाकर मन कुछ तृप्त हुआ।
लेकिन आत्मा का लक्ष्य कभी उन, फल से नहिं संतृप्त हुआ।।
नाना फल थाल सजाकर मैं, गिरनार क्षेत्र पूजन कर लूँ।
गिरिवर पर ध्यान करूँ मैं भी, ऐसी आतम शक्ती भर लूँ।।8।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीनेमिनाथनिर्वाणभूमि गिरनारगिरिसिद्धक्षेत्राय मोक्षफलप्राप्तय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल से फल तक वसु द्रव्य मिलाकर, अर्घ्य बनाया जाता है।
''चन्दनामती'' तब पद अनर्घ्य का, भाव हृदय में आता है।।
अब स्वर्ण थाल में अर्घ्य सजा, गिरनार क्षेत्र पूजन कर लूँ।
गिरिवर पर ध्यान करूँ मैं भी, ऐसी आतम शक्ती भर लूँ।।9।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीनेमिनाथनिर्वाणभूमि गिरनारगिरिसिद्धक्षेत्राय अनर्घ्यपदप्रोप्तय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा –

स्वर्ण भृंग में नीर ले, जाऊँ गिरि गिरनार।
रत्नत्रय की प्राप्ति हित, करूँ धार त्रयबार।।10।।

शांतये शांतिधारा।

विविध पुष्प की अंजली, भर पूजूँ गिरिराज।
गुण पुष्पों के संग ही, पाऊँ पद सुरराज।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

– अर्घ्य–

राजागण सह बारात लिए, जूनागढ़ पहुँचे नेमिकुंवर।
जहाँ इंतजार में खड़ी हुई, थी राजुल वरमाला लेकर।।
पशु बंधन देख चले प्रभुवर, गिरनारगिरी पर तप करने।
दीक्षाकल्याणक से पवित्र वन, सहस्राम्र* को नमन करें।।1।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीनेमिनाथदीक्षाकल्याणकपवित्रसहस्राम्रवनयुक्त-गिरनारगिरिसिद्धक्षेत्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

* सिरसा वन

आश्विन शुक्ला प्रतिपद के दिन, शिरसा वन में शुभ ज्ञान हुआ।
धनपति के द्वारा गगनांगण, में समवसरण निर्माण हुआ।।
उस ज्ञानकल्याणक स्थल श्री, गिरनार गिरी को नमन करूँ।
शुद्धात्मज्ञान की प्राप्ति हेतु, अज्ञानभाव उपशमन करूँ।।2।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीनेमिनाथकेवलज्ञानकल्याणकपवित्रगिरनारगिरिसिद्धक्षेत्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

आषाढ़ सुदी सप्तमि प्रभु ने, निर्वाण धाम को प्राप्त किया।
इन्द्रों ने आकर नेमिनाथ का, महामोक्ष कल्याण किया।।
गिरनार की पंचम टोंक को प्रभु का, मोक्ष धाम माना जाता।
मैं अर्घ्य चढ़ाकर नमन करूँ, मेरा शिवपद से हो नाता।।3।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीनेमिनाथमोक्षकल्याणकपवित्रगिरनारगिरिसिद्धक्षेत्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य –

प्रभु नेमिनाथ के तीन-तीन कल्याणक से जो पावन है।
गुजरात प्रान्त में ऊर्जयन्त, गिरि का उपवन मन भावन है।।
गणिनी आर्या राजुलमति की, भी तपोभूमि सिरसा वन है।
उस गिरि को मैं पूर्णार्घ्य, चढ़ाकर पूजूँ यह मेरा मन है।।4।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीनेमिनाथस्यदीक्षाज्ञानमोक्षत्रयकल्याणकपवित्रगिरनारगिरि सिद्धक्षेत्राय पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

मंत्र जाप्य – **ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीनेमिनाथनिर्वाणभूमि गिरनारगिरिसिद्धक्षेत्राय नमः।**

जयमाला

–शंभु छन्द –

श्रीसिद्धक्षेत्र गिरनार तीर्थ, का अर्चन सिद्धिप्रदायक है।
आतमसिद्धि के साथ-साथ, सांसारिक सुख परिचायक है।
निर्वाणभूमि की श्रेणी में, इसका प्राचीन कथानक है।
शौरीपुर से जूनागढ़ तक, जुड़ गये पंचकल्याणक हैं।।1।।

छ्यासी हजार अरू पाँच शतक, वर्षों पहले की घटना है।
बाइसवें तीर्थंकर नेमिप्रभु के, जीवन की घटना है।।
शौरीपुर में नृप समुद्रविजय जी, शिवादेवी संग रहते थे।
उनके आँगन में धनकुबेर, रत्नों की वर्षा करते थे।।2।।

कार्तिक शुक्ला षष्ठी को वहाँ पर, गर्भकल्याणक उत्सव था।
श्रावण शुक्ला षष्ठी को, नेमीनाथ का जन्म महोत्सव था।।
इन्द्रों ने मेरू पर्वत पर, जन्माभिषेक का ठाट किया।
शचि इन्द्राणी ने जिनबालक को, गोद में ले शृंगार किया।।3।।

कर दिया इन्द्र ने नामकरण, तब नेमिनाथ जयकार हुआ।
श्रीकृष्ण और बलदेव भ्रात के, साथ एक इतिहास जुड़ा।।
थी श्यामवर्ण काया प्रभु की, पर सुन्दरता कुछ अनुपम थी।
सूरज चन्दा की दिव्यप्रभा भी, प्रभुवर के सम्मुख कम थी।।4।।

शैशव से बचपन में आये, फिर क्रम से वे युवराज बने।
पितु भ्रात सभी बारात लिये, फिर जूनागढ़ गिरनार चले।।
कुछ षड्यंत्रों से रचे गये, पशुबंधन को देखा प्रभु ने।
तत्क्षण विरक्त हो गये नाथ, नहिं ब्याह किया पहुँचे वन में।।5।।

राजुल भी तो आर्यिका बनी, पति की अनुगामिनि बन करके।
प्रभु समवसरण की गणिनी बन, कल्याण किया राजुल सति ने।।
बस इस इतिहास से ही प्रभु के, तीनों कल्याणक हुए वहाँ।
गिरनार बना तीरथ फिर तो, कितने मुनियों ने मोक्ष लहा।।6।।

हैं आज भी इस पर्वत पर राजुल, महासती के चरण बने।
राजुल की गुफा कहें उसको, उनके तप की जो कथा कहे।।
सिरसा वन भी साक्षात् वहाँ, प्राचीन कथानक कहता है।
जो भी तप करे यथाशक्ती, वह खुद भी प्रभु सम बनता है।।7।।

है वर्तमान में यह पर्वत, सबकी श्रद्धा का केन्द्र कहा।
थक थक कर पर्वत पर चढ़कर, भी भक्त अथक श्रम करें वहाँ।।
फिर भी पुण्योपार्जन का सुख, नहिं दुखकिंचित् होने देता।
पर्वत यात्रा कर हर यात्री, सुख की अनुभूती कर लेता।।8।।

इस पर्वत का वन्दन करने, श्रीकुन्दकुन्द गुरु आए थे।
निज संघसहित यात्रा करके, कुछ चमत्कार दिखलाए थे।।
पाषाण अम्बिका बोल पड़ी, जिनधर्म दिगम्बर सच्चा है।
जय जय कारों से गूँजा तब, निर्ग्रन्थ पंथ ही अच्छा है।।9।।

अतिशयकारी गिरनार क्षेत्र की, पूजन को हम आये हैं।
आठों द्रव्यों का थाल सजा, पूर्णार्घ्य चढ़ाने आये हैं।।
यह सिद्धक्षेत्र हम सभी प्राणियों, के मनरथ को पूर्ण करे।
''चन्दनामती'' बस यही कामना, है आतम रस पूर्ण भरे।।10।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीनेमिनाथनिर्वाणभूमिगिरनारगिरिसिद्धक्षेत्राय जयमाला पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

सिद्धक्षेत्र गिरनार गिरी की, जो करते पूजा रुचि से।
सिद्धभूमि को वंदन करके, निजपद की सिद्धी करते।।
गिरिवर सम ऊँचाई पाकर, अविचल स्थिर हो जाते।
तभी ''चन्दनामती'' जगत में, सबका हित वे कर पाते।।

।। इत्याशीर्वादः।।

श्री नेमिनाथ भगवान की आरती

—प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

तर्ज –लेके पहला-पहला प्यार.....।

जय जय नेमिनाथ भगवान, हम करते तेरा गुणगान,
तेरी आरति से मिटता है तिमिर अज्ञान।।
करते प्रभु जग का कल्याण, तुमने पाया पद निर्वाण।
तेरी आरति से मिटता है तिमिर अज्ञान।।टेक.।।

राजुल को त्यागा प्रभु जी ब्याह न रचाया।
गिरनार गिरि पर जाकर योग लगाया।
प्राप्त हुआ फिर केवल ज्ञान, दूर हुआ सारा अज्ञान,
तेरी आरति से मिटता है तिमिर अज्ञान।।1।।

शिवा देवी माता तुमसे धन्य हुई थी।
शौरीपुरी की जनता पुलकित हुई थी।
समुद्र विजय की कीर्ति महान, गाई सुर इन्द्रों ने आन,
तेरी आरति से मिटता है तिमिर अज्ञान।।2।।

सांझ सवेरे प्रभु की आरति उतारूँ।
तेरे गुण गाके निज के गुणों को भी पा लूँ।।
करे 'चंदनमति' गुणगान, होवे मेरा भी कल्याण,
तेरी आरति से मिटता है तिमिर अज्ञान।।3।।

भगवान नेमिनाथ जन्मभूमि

शौरीपुर तीर्थ की आरती

—प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

तर्ज –मनिहारों का रूप.....

जन्मभूमि की गुणगाथा गाएँ।
दीप घृतमय सजा करके लाए।।टेक.।।

नेमिनाथ प्रभू की, जनमभूमि है।
यमुना तट पर बसी, शौरीपुर नगरी है।।
भक्ति शब्दों से हम दरशाएं, दीप घृतमय सजा करके लाए।।1।।

शौरीपुर के थे, राजा समुद्रविजय।
शिवादेवी के संग, रहते महलों में वे।।
वही इतिहास सबको बताएँ, दीप घृतमय सजा करके लाए।।2।।

पन्द्रह महिने रतन बरसे जिस भूमि पर।
दो दो कल्याणकों से वो पावन नगर।।
उसी तीरथ की महिमा को गाएँ, दीप घृतमय सजा करके लाए।।3।।

नेमी जी ब्याह को, जब चले जूनागढ़।
पशुबंधन को लख, चले दीक्षा को वन।।
बालयति प्रभु के पद सिर नमाएं, दीप घृतमय सजा करके लाए।।4।।

सति राजुल ने भी, पति के ही पथ पर चल।
घोर तप को किया, आर्यिका गणिनी बन।।
रत्नत्रय प्राप्ति के हेतु ध्याएँ, दीप घृतमय सजा करके लाए।।5।।

कई मुनियों ने निर्वाण पद पाया है।
सिद्धभूमी भी यह, तीर्थ कहलाया है।।
''चन्दना'' हम भी उस पद को पाएं, दीप घृतमय सजा करके लाए।।6।।

भगवान नेमिनाथ निर्वाणभूमि

सिद्धक्षेत्र गिरनार तीर्थ की आरती

—प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

तर्ज –आओ बच्चें.....

चलो सभी मिल करें आरती, सिद्धक्षेत्र गिरनार की,
नेमिनाथ के तीन कल्याणक से पावन स्थान की।।
जय गिरनार गिरिं, जय गिरनार गिरिं।।टेक.।।

इसी भूमि पर नेमिनाथ राजुल को ब्याहन आए थे,
पशुओं की चीत्कार सुनी जब, मन ही मन अकुलाए थे,
चले विरक्तमना होकर प्रभु, राह गही शिवधाम की,
नेमिनाथ के तीन कल्याणक से पावन स्थान की।।जय-जय.....।।1।।

राजुल भी पति की अनुगामिनि बन नेमी की शरण गई,
दीक्षा ले प्रभु पादकमल में, तपश्चरण में लीन हुई,
समवसरण में गणिनी बन, हुईं पावन पूज्य महान थीं,
नेमिनाथ के तीन कल्याणक से पावन स्थान की।।जय-जय.....।।2।।

टोंक पाँचवीं इस पर्वत की, प्रभु को जहाँ निर्वाण हुआ,
इसी तीर्थ गिरनार से कितने, मुनियों ने भी मोक्ष लहा,
कर उत्कीर्ण चरण सुरपति ने, गाया जय-जयगान भी,
नेमिनाथ के तीन कल्याणक से पावन स्थान की।।जय-जय.....।।3।।

इस पर्वत का वंदन करने कुन्दकुन्द गुरु आए थे,
बोल पड़ी पाषाण अम्बिका, चमत्कार दरशाए थे,
हुई जीत निग्रन्थ धर्म की, ऐसी महिमावान थी,
नेमिनाथ के तीन कल्याणक से पावन स्थान की।।जय-जय.....।।4।।

जिन संस्कृति की अमिट धरोहर, पावन पूज्य तीर्थ अपना,
वर्तमान में हर जैनी की, श्रद्धा का शुभ केन्द्र बना,
मुक्तिधाम की आश लिए, 'चंदना' जजूँ गिरिराज जी।
नेमिनाथ के तीन कल्याणक से पावन स्थान की।।जय-जय.....।।5।।

सम्मेदशिखर टोंक वन्दना

—प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

तीर्थराज सम्मेदशिखर है, शाश्वत सिद्धक्षेत्र जग में।
एक बार जो करे वन्दना, वह भी पुण्यवान सच में।।
ऊँचा पर्वत पार्श्वनाथ हिल, नाम से जाना जाता है।
जिनशासन का सबसे पावन, तीरथ माना जाता है।।1।।

जब प्रत्यक्ष करें यात्रा, उस पुण्य का वर्णन क्या करना।
लेकिन प्रतिदिन भी परोक्ष में, गिरि का ध्यान किया करना।।
आँख बन्दकर करो कल्पना, मेरी यात्रा शुरू हुई।
प्रातःकाल चले सब यात्री, जय जयकारा शुरू हुई।।2।।

एक हाथ में छड़ी दूसरे, में चावल की झोली है।
ज्यादातर सब पैदल हैं, पर किसी-किसी की डोली है।।
कभी न चलने वाले भी, हिम्मत पर पर्वत चढ़ते हैं।
पारस प्रभु के पास पहुँचने, हेतु कदम बढ़ चलते हैं।।3।।

चढ़ते-चढ़ते आठ किलोमीटर, का पथ जब तय होता।
दायें हाथ तरफ तब इक, चौपड़ा कुंड दर्शन होता।।
वहाँ दिगम्बर जिनमंदिर, संस्कृति की अमिट धरोहर है।
पार्श्वनाथ चन्द्रप्रभु बाहुबलि की मूर्ति मनोहर हैं।।4।।

उस मन्दिर में रुककर अपने, प्रभु का दर्शन कर लेना।
सुन्दर बनी धर्मशाला में, इच्छा हो तो ठहर लेना।।
मंदिर दर्शन करके फिर, यात्रा प्रारंभ करो अपनी।
बायें हाथ चलो चढ़ कर जहाँ, गौतम स्वामी टोंक बनी।।5।।

यहाँ पहुँचकर ठंडी-ठंडी, हवा थकान मिटाती है।
गणधर चरण वन्दना से, यात्रा की शक्ती आती है।।
प्रथम टोंक यह हुई पास में, दुतिय टोंक कुंथु जिन की।
तीर्थंकर क्रम में यह पहली, टोंक नमूँ कुंथु प्रभु की।।6।।

इन टोंकों के दर्शन से, उपवास का फल प्रारंभ हुआ।
त्रय प्रदक्षिणा देने से, आगे शुभ गति का बंध हुआ।।

शुभ भावों से आगे बढ़कर, टोंक तीसरी आती है।
श्रीनमिनाथ जिनेश्वर की, वन्दना सहज हो जाती है।।7।।

चौथा नाटक कूट तीर्थंकर, अरहनाथ का आया है।
जहाँ करोड़ों मुनियों ने भी, तपकर शिवपद पाया है।।
वन्दन कर आगे बढ़ने से, मल्लिनाथ के चरण मिले।
आगे छठे टोंक पर श्री, श्रेयाँसनाथ पदकमल मिले।।8।।

इन सबका वन्दन कर मैंने, सिद्धशिला को नमन किया।
वहाँ विराजे सिद्धों को, अपने मन में स्मरण किया।।
थकना नहिं अब पुष्पदंत की, सप्तम टोंक पे चलनाहै।
आगे चढ़ने हेतु वहीं से, आतमशक्ती भरना है।।9।।

पुष्पदंत प्रभु के चरणों में, अर्घ्य चढ़ाकर नमन किया।
और चले आठवीं टोंक पर, पदमप्रभू का शरण लिया।।
नवमीं टोंक विराजे श्री, मुनिसुव्रत जिन के चरणकमल।
इन सबके पावन पद में, श्रद्धा से मैंने किया नमन।।10।।

हे भव्यात्मन् ! अब दसवीं चन्द्रप्रभ टोंक पे चलना है।
पहले दौड़-दौड़ कर उतरो, फिर ऊँचाई चढ़ना है।।
चन्द्रप्रभ मंदिर में जाकर, चरणवन्दना करना है।
अपने सारे सुख-दुख को, प्रभु चरण बैठकर कहना है।।11।।

अब ग्यारहवीं टोंक पे चलकर, ऋषभदेव को नमन करो।
गिरि कैलाश से मुक्त हुए, यहाँ उनके चरण चिन्ह प्रणमो।।
श्री शीतल जिनवर की है, बारहवीं टोंक प्रसिद्ध कही।
मन-वच-तन से वन्दन कर, पाओ यात्रा का पुण्य सही।।12।।

श्री अनंत तीर्थंकर का, तेरहवाँ कूट स्वयंभू है।
उनके चरणों में श्रद्धायुत, शीश झुकाकर वन्दूँ मैं।।
संभव जिनवर का चौदहवाँ, धवलकूट माना जाता।
वासुपूज्य जिनका पन्द्रहवां, टोंक सभी को सुखदाता।।13।।

इनको वन्दन कर आगे, अभिनन्दन प्रभु के पास चलो।
बन्दर चिन्ह सहित उन प्रभु की, टोंक पे बन्दर सेान्डरो।।
अभिनन्दन के चरणों में, कर नमन चलो जलमंदिर तक।
चढ़ो वहाँ से जहाँ है गौतम, गणधर प्रभु की टोंक प्रथम।।14।।

फिर सत्रहवीं टोंक से अपनी, अगली यात्रा करना है।
धर्मनाथ प्रभु के चरणों में, नमन सभी को करना है।।
सुमतिनाथ का अट्ठारहवाँ, टोंक है अविचल कूट कहा।
नौ करोड़ बत्तीसलाख, उपवास का फल मिलता है यहाँ।।15।।

उन्निसवाँ है टोंक शांतिजिन, का जो यहाँ से मोक्ष गये।
नौ करोड़ से अधिक मुनी, इस कुंदकूट से मोक्ष गये।।
शांतिनाथ के संग सब मुनियों, को श्रद्धा से नमन किया।
पुनः बीसवीं टोंक पे जाकर, वीरप्रभू की शरण लिया।।16।।

श्री सुपार्श्व तीर्थंकर इक्कीसवीं टोंक पर राजे हैं।
कहते हैं यहाँ की मिट्टी से, रोग सभी नश जाते हैं।।
इनका वंदन करके पास में, विमल नाथ की टोंक चलो।
बाइसवीं इस टोंक को नमकर, अजितनाथ के निकट चलो।।17।।

थके कदम से तेइसवीं इस, टोंक का वंदन कठिन तो है।
लेकिन यात्रा पूरी करने, का शुभ भाव हृदय में है।।
धीरे-धीरे चढ़कर आखिर, अजितनाथ तक पहुँच गये।
उन चरणों में नमन किया फिर, नेमिनाथ जी प्राप्त हुए।।18।।

इस चौबिसवीं टोंक पे नेमीनाथ चरण को नमन किया।
पारसनाथ प्रभू पाने हेतू फिर मैंने गमन किया।।
स्वर्णभद्र यह टोंक है अंतिम, यात्रा पूर्ण यहाँ होती।
पार्श्वनाथ की पूजन करके, मन सन्तुष्टि यहाँ होती।।19।।

कुछ क्षण ध्यान करो फिर नीचे, गुफा में स्थित चरण नमो।
खुशी-खुशी वन्दना पूर्ण कर, पर्वत से नीचे उतरो।।
यही वन्दना आत्मा की, भव्यत्व शक्ति बतलाती है।
तभी ''चन्दनामती'' सभी में, भक्ति स्वयं आ जाती है।।20।।

भगवन् ! इस सम्मेदशिखर का, पुनः पुनः दर्शन पाऊँ।
यही भावना है मन में, सिद्धों के गुण में रम जाऊँ।।
इसी क्षेत्र से कभी मुझे, निर्वाण धाम भी मिल जावे।
सिद्ध भक्ति मेरे जीवन में, सिद्ध अवस्था दिलवाये।।21।।

मण्डल का नक्शा